

नई शैरी शायरी
कलामे तावां

नई शैरो शायरी



ताबां



१९५८

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

प्रकाशक
साहित्य प्रकाशन,
दिल्ली ।



मूल्य
दो रुपया आठ आना



मुद्रक
सुरेन्द्र प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड,
टिप्टी गंज, दिल्ली ।

दो शब्द

उर्दू शायरी फारसी शायरी की देन है इससे इंकार नहीं किया जा सकता परन्तु क्योंकि इसका विकास भारत में हुआ है इसलिए भारतीय संस्कृति, भारतीय साहित्य और भारतीय जन-जीवन का प्रभाव भी इस पर न हुआ हो ऐसी बात नहीं है ।

उर्दू शायरी या हिन्दी कविता, दोनों के ही आदि रूपों में आत्मा, परमात्मा की फिलासफी और शृंगार की प्रधानता रही है । इसको रूपकों में प्रत्यक्ष और परोक्ष में नर और नारी को ही चित्रित किया गया है । उन्ही के रूप में अंत और अनंत की भावना को कवियों और शायरों ने साकार किया है ।

उर्दू शायरी में शराब को सोमरस का स्थान मिला है जिससे हिन्दी कविता महरूप सी ही रह गयी है । नई हिन्दी कविता में जो इसके रूप की थोड़ी सी झलक आई है वह संस्कृत के सोमरस का प्रभाव न होकर उर्दू की शराब का ही प्रभाव है ।

यह शराब भी लौकिक और पारलौकिक दोनों ही रूपों में सामने आई है और इसमें डूबकर शायरों ने लोक और परलोक, आत्मा और परमात्मा का चित्रण किया है, नर और नारी के रूप को निखारा है, और मानवीय भावना के कल्पना के आधार पर वे रंगीन चित्र चित्रित किये हैं कि जिनकी छाप पाठकों के दिलों पर अमिट हो गई है । मिट नहीं सकती वह जब तक उसका साहित्य जीवित है और उसमें इन्सानो दिल को हिला देने की शक्ति विद्यमान है ।

उर्दू शायरी में ढांचा भारतीय न होने से, कहीं-कहीं शायरों के विद्वता प्रदर्शित करने के नाते फारसी शब्दों की झडी लगा देने से आम भारतीय उसे समझने से महरूप रह जाता है परन्तु फिर भी उर्दू जवान का आकर्षण, उसकी सफाई-मंजाई और प्रभावत्मकता अपना असर करती ही है ।

उर्दू शायरी में जो आकर्षण है वह अपना सानी नहीं रखता । उसमें दिल को सीधा छू देने की शक्ति है, बात को दो शब्दों में कह देने की करामत है

और चित्र खींचने की क्षमता है ।

यह रही पुरानी शायरी की बात । परन्तु जैसे समय बदला, दुनिया पार-लौकिक विचारों से भौतिक विचारों का और बड़ी और जो कुछ इसानी मस्तिष्क ने सच करके दिखाया उसकी अहमियत को अनुभव किया गया, माना गया, तो शायरी ने भी अपना रूप बदला और समय की प्राति को खुले दिव से अपनाया । इन्सान की प्रगति को परखा और उसके चित्र अंकित किये । शाय शृंगार और खुदाई फिलासफी से आगे बढ़ कर (या पीछे हटकर भी इसे कुछ लोग कह सकते हैं) इन्सानी तरक्की को चित्रित किया, और खूब किया । उर्दू शायरी का यह रूप उसकी जिन्दगी का प्रत्यक्ष प्रमाण है । जड़ता नहीं है उसमें, आगे बढ़ने और बढ़ती हुई शक्ति को पहचानने और अपनाने की क्षमता है । इससे यह सिद्ध होता है ।

प्रस्तुत पुस्तक में उर्दू के प्रसिद्ध आधुनिक शायर श्री तावां की शायरी के कुछ चुने हुए रूप पाठकों को देखने के लिए मिलेंगे । आपकी शायरी में पुराना और नया दोनों का मिश्रित रूप पाया जाता है । जीवन के रंगीन और प्रगति के जिन्दा दिल पहलू, दोनों ही आपकी शायरी में साथ-साथ चलते हैं और इसीलिए उनमें दिलों को गुदगुदा देने की शक्ति भी है और उत्साह तथा उमंग के साथ मानवीय प्रगति की राह पर बढ़ने की क्षमता भी है । विचार भी है और भावना भी । दोनों का सुन्दर समन्वय है ।

एक विशेषता जो मैंने आपकी शायरी में देखी वह है प्रकृति से प्रेम, पहाड़ी गीतों से प्रेम :—

दूर वादी मे कोई गीत किसी ने छेड़ा ,
तुद आवाज उठी, गूजी, फिजा में बिलरी ,
तुद—जिस तरह उबलता है पहाड़ी चरमा ,
गूँजता संगेगिरा वार से टकराता हुआ ।

× × × ×

चीठ की छाधों में गाते हुए चरमे के करीब
जाने क्यों देर से बँठी है पहाड़ी लड़की ?

आपकी शायरी में नजाकत भी है, विद्वता भी और कल्पना का समन्दर

लहराता दिखाई देता है । हिन्दी पाठकों के सामने जो कठिनाई आने वाली है वह है आपकी भाषा की क्लिष्टता । उसे दूर करने के लिए लेखक ने कठिन शब्दों का अर्थ नीचे दे दिया है । इससे पाठकों को शायरी का अर्थ समझने में कठिनाई नहीं होगी ।

मुझे विश्वास है कि हिन्दी पाठक आपकी शायरी को पूरे आकर्षण के साथ अपनायेंगे, क्योंकि मैंने भी एक हिन्दी पाठक होने के नाते इसमें रस लिया है और ध्यानन्द लाभ किया है ।

—यज्ञदत्त शर्मा

?

जब सकूते-शाम^१ में इक नगमगी^२ सी पाओगी ,
 तुम भी अपनी जिन्दगी में कुछ कमी सी पाओगी ।
 'पी कहीं' पैदा करेगी जब फ़िजा^३ में इतिआश^४ ,
 जिदगो के साज में इक बरहमी^५ सी पाओगी ।
 झूम कर छा जायेगी सावन की जब काली घटा ,
 इन हसी^६ आंखों में इक नाजुक नमी सी पाओगी ।
 वे सबब पज मुर्दा, अफ़सुर्दा^७ रहोगी रात दिन ,
 वे सबब दिलचस्पियों में तुम कमी सी पाओगी ।
 एक लज्जत^८ सी मिलेगी दास्ताने-हिज्र^९ में ,
 ग़म के अफ़सानों में तुरफ़ा^{१०} दिलकशी सी पाओगी ।
 हूक सी दिल में उठेगी सुन के कोयल की सदा^{११} ,
 मीठे नग़मों में भी ग़म की चाशनी सी पाओगी ।
 देख कर रंगे-चमन^{१२} दिल की कली मुझायेगी ,
 तुम बहारों में भी इक अफ़सुर्दगी^{१३} सी पाओगी ।
 जब कभी भूले से दिल में याद आयेगी मिरि ,
 ग़म पेशानी में^{१४} तुम कुछ-कुछ नमी सी पाओगी ।
 जब किसी अखवार में देखोगी तुम-मेरा कलाम^{१५} ,
 आंख में आंसू मगर दिल में खुशी सी पाओगी ।

१. संध्या समय की चुप्पी । २. संगीत । ३. वातावरण । ४. कम्पन । ५. उत्ते-
 जना । ६. हसीन (सुन्दर) । ७. खिन्न तथा उदासीन । ८. स्वाद । ९. विरह की
 कथा । १०. अनोखी । ११. आवाज । १२. वाग का रंग । १३. उदासीनता ।
 १४. माये में । १५. कविता ।

मंजिल

ताकते-रफ्तार^१ 'तावां' याजमाना है मुझे ;
मुश्किलाते-राह को^२ आसां बनाना है मुझे ,
कुछ भी हो लेकिन कदम आगे बढ़ाना है मुझे ,
दूर जाना है मुझे ।

गर्मी-ए-रफ्तारे-अहदे-नौजवानी^३ की क्रसम ,
वर्क-गामी^४ की क्रसम, तूफां-खरामी^५ की क्रसम ,
इम्तियाजे-दूरी-ओ-कुरवत^६ मिटाना है मुझे ,
दूर जाना है मुझे ।

बढ़ चुका है जो कदम पीछे वो हट सकता नहीं ,
चाहे कुछ हो जाये लेकिन मैं पलट सकता नहीं ,
अब तो बढ़ना है मुझे, बढ़ते ही जाना है मुझे ,
दूर जाना है मुझे ।

डगमगाता, लड़खड़ाता, ठोकरें खाता हुआ ,
मैं चला जाऊंगा कुर्बो-बोद^७ पर छाता हुआ ,
जर्ग-ए-सावित^८ को सइयारा^९ बनाना है मुझे ,
दूर जाना है मुझे ।

रास्ते में खशमगी^{१०} तूफान हायल ही सही ,

-
१. गति की शक्ति । २. मार्ग की कठिनाइयों को । ३. युवावस्था की तीव्रगति ।
४. बिजली की तेजी । ५. तूफान की चाल । ६. दूरी तथा निकटता का अन्तर (भेद) ।
७. निकट तथा दूरी । ८. अचल कण । ९. गतिशील नक्षत्र । १०. क्रोधातुर ।

एक इक ज़र्रा जफ़ा-कोशी पे मायल^१ ही सही ,
हम नशी^२ फिर भी क़दम आगे बढ़ाना है मुझे ,
दूर जाना है मुझे ।

खार^३ क्या तलवार सद्दे-राह^४ बन सकती नहीं ,
बाहनी दीवार^५ सद्दे-राह बन सकती नहीं ,
इंक्रिलावी अज़मे--मुस्तहकम^६ दिखाना है मुझे ,
दूर जाना है मुझे ।

राह की दुश्वारियों से खेलता जाऊंगा मैं ,
सख्त नाहमवारियों से^७ खेलता जाऊंगा मैं ,
आवला-पाई पे^८ 'तावां' मुस्कराना है मुझे ,
दूर जाना है मुझे ।

१. अत्याचार करने पर उतारू । २. सहचर । ३. कांटा । ४. रास्ते की बाधा । ५. छोटे की दीवार । ६. दृढ़ संकल्प । ७. असमतल भूमि में । ८. पैरों के छालों पर ।

हसीन इंकिलाबी

वो होंटों पे खस्रां शुआए शिहाबी^१

वो चेहरा वुफूरे-हया^२ से गुलाबी

वो नैना रसीले कि मधु के पियाले

वो नज़रों का आलम शराबी-शराबी

वो माथे पे बिंदी फ़लक^३ पर सितारा

वो आरिज^४ कि आईनए-माहताबी^५

वो वालों में सावन की रातों का आलम

वो साड़ी का आंचल गुलाबी-गुलाबी

वो मौजू^६ सा क़द, वो छरेरा सा जुस्सा^७

वो लम्बी सी गर्दन, वो चेहरा किताबी

लताक़त मुजस्सम,^८ नज़ाकत सरापा

वहारों का इक पंकरे-नौ-शवाबी^९

शराक़त से मामूर^{१०} उसकी ज़सारात^{११}

हिजाबों में डूबी^{१२} हुई वे हिजाबी

वो पस्ती में भी एक शाने-बुलंदी

वो आला तख़य्युल^{१३} की गर्दू रिकाबी^{१४}

१. होंटों पर नृत्यशील तारों की किरण। २. लज्जा के बाहुल्य से
३. आकाश। ४. कपोल। ५. चन्द्र-दर्पण। उचित (सुन्दर)। ७. बदन
८. कोमलता का प्रतिरूप। ९. नज़ाकत। १०. नवयौवन का
प्रतिरूप। ११. परिपूर्ण। १२. साहस। १३. आवरणों में। १४. उन्नत
कल्पना। १५. आकाश तक उड़ान लेना।

लवे-अहमरीं पर^१ वो आजाद नारे
 वो नाजुक से हाथों में परचम शिहावी^२
 रगों में खा दुरियत का^३ लहू है
 निगाहों में है मंजिले कामियावी
 तखय्युल में एहसासे-दूरी-ए-मंजिल^४
 कदम उठ रहे हैं शताबी-शताबी
 हर इक गाम^५ पर लाख फ़ितने^६ उठाती
 चली जा रही है हसी^७ इक़िलाबी

१. लाल होठों पर । २. लाल झंडा । ३. स्वतंत्रता का खून ।
 ४. मंजिल की दूरी का अनुभव । ५. कदम । ६. उपद्रव । ७. हसीन
 (गुन्दर) ।

एक मुशाहिदा^१

भोग चुका है रात का दामन तारे झिलमिल होते हैं ,
 जाग उठी है सुबह की देवी, दुनिया वाले सोते हैं ।
 पूरब में कुछ हल्की-हल्की संवलाइट सी छाई है ,
 पहली किरन नज़रों से निहां^२ मसरुफे-खुल्द-आराई^३ है ।
 दूर यहां से दूर उफ़क^४ पर कच्ची चांदी गलती है ,
 फितरत की दोशीजा^५ रूख पर नूर का^६ गाजा मलती है ।
 फँस चुकी है सुबह की ताबिश^७ जलवा गाहे-हस्ती^८ में ,
 जंगल में कुहसारों में^९ मैदानों में और वस्ती में ।
 घाट पे इक लड़की गंगा से जल भरने को जाती है ,
 उठती जवानो, रूप निराला, चलती है और गाती है ।
 गाल दमकते कुन्दन जैसे आंखों से मय ढलती है ,
 काफ़िर गेसू दोश पे^{१०} बिखरे, मस्त अदा से चलती है ।
 होटों पर बेताव तराने रक्से-पैहम^{११} करते हैं ।
 कैफो-मस्ती^{१२} की दीलत से सुबह का दामन भरते हैं ।
 कौन है ये संगीत की रानी किन आंखों का तारा है ?
 जिसके गम में गाती है वो कौन मुकद्दर वाला है ?
 जंगल सारा गूँज रहा है, मीठी-मीठी तानों से ,

१. प्रत्यक्ष दर्शन । २. निहित । ३. स्वर्ग सजाने (में व्यस्त) ।
 ४. क्षितिज । ५. सुन्दरी । ६. चेहरे पर रोशनी । ७. चमक । ८. संसार ।
 ९. पर्वतमालाओं में । १०. केश कांधे पर । ११. निरंतर नृत्य । १२. आनन्द
 तथा उन्माद ।

झांक रही है राग की देवी आकाशी ऐवानों से ।
 रस की भरी आवाज हवा की लहरों में लहराती है,
 नगमों का एक जाल फिजा में जैसे बुनती जाती है ।^१
 जेरों-ब्रम^२ गंगा की लहरों से जाकर टकराते हैं,
 टकरा कर जब उठते हैं तो हस्ती पर छा जाते हैं ।

पंचम तानों से सीने में दीपक जलते जाते है,
 शोलों के सांचे में जैसे नगमे ढलते जाते हैं ।
 गीत के हर-हर बोल से दल में नशतर टूटा जाता है,
 हाथ से मेरे होश का दामन 'तावां' छूटा जाता है ।

१. महलों से । २. संगीत की ऊँची नीची ताने ।

उम्मीद

जिदगी के भबकते हुए मैखाने से,
बादा - ए - तल्खी - ए-अय्याम^१ अभी पीना है,
साजगारी^२ नहीं करती है हवा-ए-इमरोज^३,
फिर भी उम्मीद पे फ़र्दा^४ कि हमें जीना है।

नारसा बख्त^५—जमाने का बहीमाना^६ चलन,
कितनी उपतादें^७ हैं दुनिया में मुहब्बत के लिए,
और बेरूह रवायात का फ़सूदा निज़ाम^८,
ये भी मिनजुमला-ए-आफ़ात^९ है उल्फ़त के लिए।

दर्द के बोझ से एहसास दबा जाता है,
हौसले पस्त हुए जाते हैं तदबीरें दाल,
तीरा-ओ-तार^{१०} है दुनिया-ए-तमन्ना की फ़िजा^{११},
छा रहे हैं शमो-आलाम के^{१२} गहरे बादल।

टिमटिमाता हुआ उम्मीद का नन्हा सा चिराग,
किसी मायूस के सीने का महकता हुआ दाग।
अब भी जलता है मगर शम के शबिस्तानों में^{१३}।

१. कट्टू समय की शराब। २. सहायता। ३. वर्तमान हवा (परि-
स्थितियाँ)। ४. कल (भविष्य)। ५. दुर्भाग्य। ६. पशुओं का सा चलन।
७. मुसीबतें। ८. मृत परम्पराओं की जीर्ण व्यवस्था। ९. कुल मुसीबतों में
से एक। १०. अंधकारमय। ११. अभिलाषा रूपी संसार का वातावरण।
१२. दुखों और चिंताओं के। १३. शयन कक्षों में।

लम्हए-फुर्सत^१

उफ़ ये पूरब की हवा, हाय ये काले बादल
रस भरी बूंदों से भीगा हुआ शव^२ का आंचल
ला मेरा जाम, कहां है मेरी मय की बोतल ?

आज पीने का मज़ा है मुझे पी लेने दे ।

मौत को छांटों में एक रात तो जी लेने दे ॥

रात अपनी है मेरी जान, सहर^३ हो कि न हो,
फिर कोई लम्हा मुहब्बत का बसर हो कि न हो,
और जुबारे-तरब^४ शोला-ए-तर^५ हो कि न हो,

कल खुदा जाने कहां जुस्तजू ले जायेगी ?

अजनबी वादियों में ठोकरें खिलवायेगी ॥

मैं मुसाफ़िर हूँ बहुत दूर है मेरी मंजिल,
राह में सँकड़ों तूफ़ाने-हवादिस हायल^६
मैं कहां और कहां फिर ये निशाते-महफ़िल^७

सुवह होते ही उखड़ जायेगा डेरा अपना ।

जाने कल रात कहां होगा बसेरा अपना ॥

घम का मारा हुआ आलम का तड़पाया हुआ,
नासाजा^८ सूरते-हालात^९ का सहमाया हुआ,

१. अवकाश का क्षण । २. रात । ३. सुबह । ४. आनन्द का प्रकाश
फैलाने वाली । ५. शराब । ६. घटनाओं के तूफान बाधक है । ७. महफ़िल
का रस । ८. अमंगलपरिस्थितियों का । ९. जीवन की कश-म-कश

और इस कश-म-कशे-जीस्त^१ से उकताया हुआ ,
 तोड़ कर वन्दे-कफ़स^२ आज यहाँ आया हूँ ।
 अपने पहलू में दहकता हुआ दिल लाया हूँ ॥
 वज्र में धूम मचाने के लिए आया हूँ,
 तलखी-ए-ग़म को^३ भुलाने के लिए आया हूँ,
 आज मैं पीने-पिलाने के लिए आया हूँ,
 तू भी पी ले, मेरी जां, मुझको भी पी लेने दे ।
 मौत की छाँओं में एक रात तो जी लेने दे ॥

१. जिन्दे (परिस्थितियों) का बंद । २. गम की कटुता को ।

याद

आज फिर फ़िक्रो- नज़र^१ ख़्वाबों की जौलाँ गाह^३ है,
जिन्दगी भटकी हुई है आरजू गुमराह है,
आज फिर याद आ रहा है वो शविस्ताने-जमाल^३ ।
नीम ख्वाबीद^४ । शविस्ताँ नूरो नकहत का^५ सराब^६ ,
इश् बरसाती हवा में चौधवीं का माहताब ,
आस्माँ पर दूर तक फैला हुआ तारों का जाल ।
और तारों की खुनक^७ छाँओं में वो मेरे करीब,
रिफ़ाते-अशें-बरीं पर^८ खंदाजन^९ मेरा नसीब,
हर नफ़स मौजे-मसरंत हर नज़र अक्से-जमाल^{१०}
और उन रंगीं लवों का एक लम्सेँ आतशीं^{११} ,
आज तक जो मेरे होटों पर है लज्जत आफ़रीं^{१२} ,
हो गया था जिस से दो रूहों का वाहम इन्तिसाल^{१३}
वेकरां लम्हे मुकामो-वक़्त की^{१४} राहों से दूर,
जिन्दगी और मौत की इन कश-मकश गाहों से दूर,
आज वो दमसाज़^{१५} लम्हे हो गये ख्वाबों-खयाल ।

-
१. चित्तन शीलता २. दौड़ाने की जगह ३. रूप का स्थानगृह ४
अर्धनिद्रित ५. प्रकाश तथा सुगन्धि का ६. मृग मरोचिका ७. चांद
८. शीतल ९. सब से ऊंचे आकाश की ऊंचाई पर १०. हंस रूहा
११. हर स्वाँस आनन्द की लहर है और हर दृष्टि सोदर्य का प्रति-
बिंब १२. अग्नि का सा स्पर्श १३. रस छिड़के हुए १४. आपसी
मिलाप १५. असीमित क्षण (स्थान तथा समय के) १६. सहचर, अनुकूल ।

आज फिर फ़िक्रो-नज़र ख्वाबों की जौलांगह है,
जिन्दगी भटकी हुई है आरजू गुमराह है,
आज फिर याद आ रहा है वो शबिस्ताने-जमाल ।

असरे-माह

चश्म-ए-शबनम में^२ जैसे घुल रही है चांदनी ,
रफ़ता रफ़ता-तीरगी^३ में घुल रही है चांदनी ।
फँलता जाता है दुनियाँ पर हसीं^४ ख्वाबों का जाल ,
जिस तरह शायर के पुर-असरार^५ आवारा खयाल ।
एक बेपार्याँ फ़ुसुं तारी है^६ जेरे-आस्मां^७ ,
ले रहा है दर्द का मारा शबाब^८ अंगड़ाइयाँ ।
कंफ़ो-मस्ती का बुफ़ूरे-बेकरां आसाब में^९ ,
बह रही है जिन्दगी जज़्बात के सैलाब में ।

ये दरखशां^{१०} चांदनी रातें ये लम्हाते-जुनुं^{११}
किस के माथे जाएगा या ख, तमन्नाओं का मू^{१२}

गुरेज़'

मेरे महबूब न कर सइये-मुदावा-ए-अलम^१,
मेरे अश्कों की^२ घटाओं को वरसने दे अभी,
और हां और, तमन्ना का लहू वहने दे,
और हां और, जवानी को तरसने दे अभी ।

ये जवां रात, ये तारे, ये दरखां माहताब^३,
ये तेरा हुस्न, ये रानाई,^४ ये नौखेज शवाब^५,
महफ़िले - जामो - सुवू, अंजुमने - चंगो - रवाब^६,
तेरी सीगंद मेरे दर्द का दरमां ही नहीं ।

तेरी आग़ोश^७ है जज़्वात की फ़िर्दौस^८ मगर,
आह मिलती ही नहीं कश-मकशे-गम से निजात^९,
आज तक तश्ना-ए-तकमील^{१०} रहा मेरा जुनू^{११},
वही जंजीर-मशय्यत^{१२} वही जिदाने-हयात^{१३} ।

मेरा एहसास^{१४} अभी तक है, तजबज़ब^{१५} का शिकार,
एक बेरव्त से माहील का आईनादार^{१६},
टूट जाये न कहीं फ़िक्रो-नज़र का पिदार^{१७},

१. विमुलता । २. दुख दूर करने की चेष्टा । ३. आंगुओं की ।
४. उज्ज्वल चांद । ५. सुन्दर । ६. तरण यौवन । ७. शराब के प्याले
और मटके की महफ़िल, चंग और रवाब (वाजों के नाम) की सभा । ८. इलाज ।
९. गोद । १०. स्वर्ग । ११. मूर्ति । १२. अपूर्ण । १३. उन्माद । १४.
माय्य रूपी जंजीर । १५. जीवन रूपी जेलघाना । १६. अनुभव । १७. द्विदिधा ।

मेरे महबूब न कर सइये-मुदावा-ए-अलग ,
अभी कुछ और तमन्नाओं का खूं कर लूं मैं ,
इतनी मुहलत तो दे तकमीले-जुनू कर लूं मैं ।

श्री लालिनी नागरी मंडार प्रकाशक
लीअनिस

दो स्त्र

पो चुका हूं म-ए-इशरत^१ के छलकते सागर ,

मैंने समझा था बहारो से बनी है दुनिया
 फूल ही फूल हैं हस्ती के गुलिस्तानों में,
 दिन बसर होते थे तफरीह^२ में अहवाब के^३ साथ
 रातें कटती थीं हसीनों के शविस्तानों में^४ ।
 ऐशो-इशरत के लिए वक्फ^५ था हर-हर लम्हा
 रक्स गाहों में^६, तमाशों में खुमिस्तानों में^७ ।

और तलखाबें अजीयत^८ भी पिया है मैंने ,

मैं ने फूलों को ही समझा था चमन का हासिल^९
 हाथ कांटों ने बहारों का फूसू^{१०} तोड़ दिया ,
 मेरे भवके हुए माहीले^{११} गमी ने ऐ दोस्त
 लेके हाथों से मेरा साजे-जुनुं^{१२} तोड़ दिया ,
 और सोये हुए अहसास की वेदारी ने^{१३}
 रामशो-रंग का पिदारे-जबू^{१४} तोड़ दिया ,

१. सुख विलास की शराब । २. मनोरंजन । ३. मित्रों के । ४. शयन गृहों में । ५. अर्पण । ६. नाच-घरों में । ७. शराब खानों में । ८. यशना का कड़वा पानी । ९. निष्कर्ष । १०. जादू । ११. राम के चाचावरण । १२. उन्माद रूपी साज । १३. जागने में । १४. संगीत तथा रंग का झूठा दम ।

मौत और जिंदगी

ये मये-तल्ल^१ भी पीना ही पड़ेगी इक दिन ।

मौत बरहक^२ सही पर जीस्त का हासिल^३ तो नहीं ,
कारवाने-तलवो-शौक की^४ मंजिल तो नहीं ,
कितनी उलझी हुई राहों से गुजरता है अभी ,
जिंदगानी की मुहिम^५ सर हमें करना है अभी ,
जिन्दगी मौत से तारीक^६ भयानक पुरहोल^७ ,
इक गिरांवार तअन्तुल का फ़सुर्दा माहोल^८ ,
इससियह खाने में^९ इक शमअ जलालें ऐ दोस्त ,
बज़मे-आजादी-ए- जमहूर^{१०} सजालें ऐ दोस्त ,
खूने-महताब से^{११} तामीरे-सहर^{१२} करना है ,
कस्से-जुलमत को^{१३} अभी जेरो-ज़बर करना है^{१४} ,
आलमे-ताजा^{१५} की तशकील का सामान करें ,
जब तलक जिदा हैं क्यों मौत का अरमान करें ,

मौत तो आयेगी आकर ही रहेगी इक दिन ।

१. कड़वी शराब । २. सच्चाई पर । ३. जीवन का निष्कर्ष । ४. चाह तथा प्रेम के कारवाँ की । ५. जीवन का मोर्चा । ६. अंधेरी । ७. भयानक । ८. ओझल गति अवरोध का उदासीन वातावरण । ९. अंधेरे घर में । १०. स्वतन्त्रता की सभा । ११. चाद के रक्त से । १२. सुबह का निर्माण । १३. अंधकार रूपी महल की । १४. ढाना है । १५. नव संसार । १६. निर्माण ।

हयाते-जावेद'

एक दिन तारीख की जुलमत में^१ खो जाऊंगा मैं ,
जिदगी की राह में पामाल हो जाऊंगा मैं ,
ये शफ़क़ आलूद^२ शामें, नर्मो-नाजुक सी फ़िजा^३ ,
ढल गई रानाइए-फ़ितरत^४ मेरे अशआर में^५ ;
गा चुका हूं कितने रंगी गीत साजे-इदक पर
पढ़ चुका कितने क़सीदे^६ हुस्न की सरकार में ;
अहले-गुलशन से^७ कहा अफ़साना-ए-बर्क़ो-शरार^८
क्रिस्ता-ए-मुफलिस^९ सुनाया महफ़िले-ज़रदार में^{१०} ;
दी वशारत^{११} सुबह की जुलमतजदा^{१२} इन्सान को
क़लवे-अस्त्रे-नी की^{१३} घड़कन है मेरे अफ़कार में^{१४} ;
महरमे-असरारे-फ़ितरत^{१५} है मेरी फ़िक़े-रसा
वारहा पहुंचा सवादे-साबितो-सव्यार मे^{१६} ।
मेरे मरने से मेरे अशआर मर सकते नहीं
मेरी तसनीफ़ें^{१७} भिरे अफ़कार मर सकते नहीं^{१८} ,

१. अमर जीवन । २. इतिहास के अंधकार में । ३. गुलाबी । ४. वातावरण ।
५. प्रकृति का सौन्दर्य । ६. कविताओं में । ७. प्रशंसा काव्य । ८. वाग
(संसार) वालों से । ९. बिजली तथा चिंगारी की कहानी । १०. निर्घन की
कहानी । ११. धनवानों की सभा में । १२. मंगल सूचना । १३. अंधेरे के
मारे हुए । १४. नवयुग के हृदय की । १५. रचनाओं में । १६. प्रकृति
के रहस्यों की ज्ञाता । १७. चिन्तनशीलता । १८. तारों तथा नक्षत्रों के
संसार में । १९. पुरतकें ।

पड़ोसन

सिफ़्रं आवाज सुनी है उसकी ,
रात^१ की तनहाई में क्या गाती है ? क्यों गाती है ? कौन कहे ?
जमजमा^२ तोज भी है, साज भी है ,
पर्दा-ए-राज^३ भी गम्माज^४ भी है ,
कितना गमगीन है लहजा उसका ?
दर्द में डूबा हुआ ,
एक तस्वीर सी खिच जाती है
दस्ते-बे-आवो-गयाह^५
और सड़ती हुई गलती हुई लाशें हर सिम्त^६
चीलें मंडलाती हुई, पंजे खोले हुए, पर तोले हुए
वादी-ए-मर्ग^७
अजनबी गीत-बमो-जेर का इक सैले-खा^८ .
जैसे सय्यारों का^९ नगमा कि समझ भी न सकूँ
(कोई कहता था कि बंगालिन है)
होगी...मुझे क्या मालूम ।

१. रात । २. गीत । ३. रहस्य का पर्दा । ४. संकेतिक । ५.
पानी और घास से रहित जंगल । ६. ओर । ७. मृत्यु की वादी । ८. गीत
के ऊंचे नीचे स्वरों का एक सैलाब । ९. नक्षत्रों का ।

एक रोमान^१

ये रात अपनी है ये माहताब^२ अपना है,
 यही पे वक्त का सँले-खां^३ ठहर जाय।
 हमें भी चलना है मंजिल तलक^४ मगर ऐ काश,
 जरा सी देर को ये कारवां ठहर जाय
 पिलाई आज जो रंगीं लवों के सागर से,
 किसी ने ऐसी म-ए तुन्दों-तेज पी ही नहीं।
 ये कहकशां^५ ये सितारे गवाह हैं ऐ दोस्त,
 तेरे अलावा मुहब्बत किसी से की ही नहीं।
 गुनाह ! जिदगी बेरंग है बगैर गुनाह,
 हयात सहने-बमन मासियत है फस्ले-बहार^६।
 शराबी होंटों की महमूर अंखड़ियों की कसम,
 रिवाजो-रस्मे-जहां गऊँ-बादा-ए-गुलनार,
 तेरा शबाब^७ तेरा हुस्न तेरी रानाई^{१०},
 खिलें ये फूल तो सारा चमन महक उट्ठे।
 तरब^{११} की आग को भड़का दे और भड़का दे,
 कि जिदगी की फ़िजा-ए-खुनक^{१२} दहक उट्ठे।

१. प्रेम। २. चाद। ३. मिलाव। ४. तक। ५. तेज शराब।
 ६. आकाश गंगा। ७. जीवन एक याग है और पाप वनंत ऋतु। ८.
 मगार की रस्मे और रिवाज मुर्ग शराब में डूब जाते हैं। ९. जीवन।
 १०. गुन्दरता। ११. आनन्द। १२. सर्द वातावरण।

यह भी गनीमत है

मौत की तारीकियों में^१ चन्द लम्हों के लिए,
खिन्दगी की शम्मे-नूरानी^२ जला सकता तो हूँ।
इस जवं हाली^३ पै भी 'तावां' वफैजे जामो-मय^४,
मुस्करा सकता तो हूँ मैं गुनगुना सकता तो हूँ।
कौन बूझे ये पहेली, हुस्न या हुस्ने-नजर?
वजमे-खूबां में रामे-हस्ती भुला सकता तो हूँ।
क्या शरज शेखी बिरहमन की सियासत से मुझे,
जिसको मैं चाहूँ खुदा अपना बना सकता तो हूँ^५।
मेरी किस्मत में नहीं 'जामे-मैए-इरफां'^६ तो क्या,
उसके होंटों के छलकाते जाम पा सकता तो हूँ।
कहकशां^७ माना कि परवाजे-तखय्युल^८ से भी दूर,
उसका कूचा रहगुजर अपनी बना सकता तो हूँ।
मैं फरिस्ता भी नहीं सूफ़ी भी मुल्ला भी नहीं,
आदमी हूँ आदमी के काम आ सकता तो हूँ।

१. अंधेरे में। २. प्रकाशयुक्त शमा। ३. बुरी हालत। ४. शराब और
प्याले की कृपा में। ५. अच्छी चीजों में। ६. ज्ञान रूपी शराब का प्याला। ७.
आकाश गंगा। ८. कत्तना की उड़ान।

जिन्दगी

तलखियां^१ जैसे फिजाओं^२ में घुली जाती है,
जुलमते^३ है कि उमंडती ही चली आती हैं,
आशियानों के करी^४ विजलियां लहराती हैं,
जिन्दगी एक अटल कोहे-गिरां^५ है लेकिन

जिस से वेदाद^६ के शैतान भी टकराते हैं
आग और खून के तूफान भी टकराते है,
मुंह की खाते है, पछड़ जाते है, जक^७ पाते हैं,
वागे-आलम^८ पे हुए कितने खिजां^९ के यलगार^{१०}
जिन्दगानी पे कई मौत ने छापे मारे।
कभी यूनां^{११} से कभी रोम से तूफान उठे,
वादी-ए-नील से उवला कभी खूनी सेलाव,
आग भड़की कभी आतिश कदहे-फारस से^{१२}
जिन्दगी शोलों में तप-तप के निखरती ही गई,
जितनी ताराज^{१३} हुई, और संवरती ही गई।

१ कटुताएँ। २. वातावरण। ३. थंबेरे। ४. निकट। ५. भारी पहाड़।
६. अन्याय। ७. कष्ट। ८. संसार रूपी बाग। ९. पतझड़। १०. आक्रमण।
११. यूनान। १२. फारिस के अग्निकुंड से। १३. ध्वस्त।

काठ गोदाम से भवाली तक.....

कितनी पुरपेच हैं कुसहार^१ की राहें हमदम ?
कार हर गाम^२ पे बल खाती चली जाती है ।
सीना-ए-कोह पे^३ दरती चली जाती है ।
खोई जाती हैं मनाजिर में^४ निगाहें हमदम ।
दामने-कोह में वो नदी किनारे गांव
बामो-दीवार पे^५ छाया हुआ करनों का^६ जमूद^७
जिन्दगी पेट के बल रेंग रही है जैसे

... ..

चीड़ की छाओं में गाते हुए चश्मे के करीब
जाने क्यों देर से बैठी है पहाड़ी लड़की ?
मुलतजी^८ नजरें हैं बेगाना-ए-एहसासे-शबाब^९

... ..

उस तरफ एक सितम दीदा^{१०} पहाड़ी मजदूर
वारे-हस्ती से^{११} झुके जाते हैं शाने^{१२} जिसके,
हांपता कांपता मंजिल की तरफ जाता है,

... ..

-
१. पवंतमाला । २. क़दम । ३. पवंत की छाती पर । ४. दृश्यों में ।
५. छतों और दीवारों पर । ६. युगों का । ७. शंखित्य । ८. बिनयी ।
९. यौवन के अनुभव से अपरिचित । १०. दुखी । ११. जीवन के बोझ से ।
१२. कंधे । ११. हरीभरी वादी ।

दूर उस वादी-ए-शादाय^१ में वो सेव के वाग
देसकर जिनको लजिल^२ होता है चागे-रिजवां^३
उनको सींचा गया इन्सां के लहू से सदियों
... ..

कितनी पुरपेच है मुहसार की राहें हमदम
कार हर गाम पे बल राती चली जाती है,
सीना-ए-कोह पे दरती चली जाती है,
खोई जाती है मनाज़िर में निगाहें हमदम ।

पहाड़ी गीत

दूर वादी में कोई गीत किसी ने छेड़ा,
 तुंद^१ आवाज़ उठी, गूंजी; फ़िज़ा में बिखरी,
 तुंद—जिस तरह उबलता है पहाड़ी चश्मा,
 गूंजता—संगे गिरां बार से^२ टकराता हुआ ।

अपने अरालाफ़ की अज़मत^३ कि जमाने का गिला
 शूमी-ए-बख्त^४ कि इब्ना-ए-वतन का^५ शिकवा
 डेढ़ सौ साल की मजहूल^६ सियासत के नुक़्श^७
 किस तरह अजनबी हाथों ने किया है ताराज^८
 ये चमन, ये पुक़्क^९ वहारों का वतन्
 या कोई, मन्जरे-रंगी^{१०}—कोई रुदादे-अजीब^{११}
 किसी दोशीजा-ए-कुहसार^{१२} का अफ़साना-ए-इस्क
 कौन बतलाये कि इस गीत का मौजू^{१३} है क्या ?

१. ऊंची । २. भारी भरकम पत्थर से । ३. पुरखों की महानता । ४. दुर्भाग्य
 ५. देश के बेटों का । ६. अज्ञात । ७. मित्र । ८. ध्वस्त । ९. आनन्द पूर्ण । १०.
 रंगीन दुःख । ११. विचित्र वृत्तान्त । १२. पहाड़ी युवती । १३. प्रेम क्या । १४. विषय

दूर उस वादी-ए-शादाब^१ में वो सेब के बाग
देखकर जिनको खजिल^२ होता है वागे-रिजवां^३
उनको सींचा गया इन्सां के लहू से सदियों
... ..

कितनी पुरपेच है कुहसार की राहें हमदम
कार हर गाम पे बल खाती चली जाती है,
सीना-ए-कोह पे दरती चली जाती है,
खोई जाती है मनाज़िर में निग!हें हमदम ।

पहाड़ी गीत

दूर वादी में कोई गीत किसी ने छेड़ा,
तुंद^१ आवाज़ उठी, गूंजी, फिजा में विखरी,
तुंद—जिस तरह उबलता है पहाड़ी चश्मा,
गूंजता—संगेगिरां वार से^२ टकराता हुआ।

अपने असलाफ की अजमत^३ कि जमाने का गिला
शूमी-ए-बस्त^४ कि इब्ना-ए-वतन का^५ शिकवा
डेढ़ सौ साल की मजहूल^६ सियासत के नुक़्श^७
किस तरह अजनबी हाथों ने किया है ताराज^८
ये चमन, ये पुर्क़^९ बहारों का वतन्
या कोई मन्जरे-रंगी^{१०}—कोई रुदादे-अजीब^{११}
किसी दोशीजा-ए-कुहसार^{१२} का अफ़साना-ए-इदक़
कौन बतलाये कि इस गीत का मौजू^{१३} है क्या ?

१. ऊंची। २. भारी भरकम पत्थर से। ३. पुरुषों की महानता। ४. दुर्भाग्य
५. देश के बेटों का। ६. अज्ञात। ७. मित्र। ८. ध्वस्त। ९. आनन्द पूर्ण। १०-
रंगीन दृश्य। ११. विचित्र वृत्तान्त। १२. पहाड़ी युवती। १३. प्रेम कथा। १४. विषय

एहसास

सोचता हूँ तेरी महफ़िल से चला जाऊँ मैं ।

रंगो-नकहत^१ का गिरांवार^२ कुचल डालेगा,
मेरी हस्सास^३ तवियत मेरी खुदारी को
ये शविस्ताने-मसरंत, तेरी उलफ़त की क्रसम,
मेरी आवारा मिज़ाजी को न रास आयेगा
जिस तरह साज से गिरती हुई नग़मों की फुवार
और भी तशनगी-ए-शौक^४ बढ़ा जाती है,
तेरी ताविदा^५ जवानी तेरा रख़िशदा^६ शवाव^६
और ज़ब्त को गुमराह करेंगे ऐ दोस्त
ज़िन्दगी काकुलो-रख़सार^७ में खो जायेगी
नग़मओ निकहती अनवार में खो जायेगी,
मेरा फ़न,^८ मेरा तख़य्युल^९ मेरे नाजुक अफ़कार^{१०}
ऐस की सदं फ़िज़ाओं में ठिठुर जायेंगे,
गीत—तारों के, शरारों के, चमनजारों के^{११}
जिनको पहनाना है अलफ़ाज़ के मलबूस^{१२} अभी
तेरी आग़ोश में^{१३} घुट-घुट के वो मर जायेंगे
साज ही साज है महफ़िल तेरी, आग़ोश तेरी

१. रंग तथा गुणधि । २. भारी बोझ ।

३. प्रेम-नियारा ४. प्रख़लित । ७. दी

कपोलों में । ११. बला । १२. कल्पना । १३

के यस्त्र । १६. याहू पाज ।

जीस्त^{१०} गर सोज नहीं कुछ भी नहीं कुछ भी नहीं ,
सोचता हूँ तेरी महफ़िल से चला जाऊँ मैं ।

एहसास

सोचता हूँ तेरी महफ़िल से चला जाऊँ मैं ।

रंगो-नकहत^१ का गिरांधार^२ कुचल डालेगा,
 मेरी हस्तास^३ तवियत मेरी खुदारी को
 ये शविस्ताने-मसरंत, तेरी उलफत की कसम,
 मेरी आवारा मिजाजी को न रास आयेगा
 जिस तरह साज से गिरती हुई नगमों की फुवार
 और भी तश्नगी-ए-शौक^४ बढ़ा जाती है,
 तेरी ताविदा^५ जवानी तेरा रखिशदा^६ शबाव^७
 और जज्बात को गुमराह करेंगे ऐ दोस्त
 जिन्दगी काकुलो-रुखसार^८ में खो जायेगी
 नगमओ निकहती अनवार में खो जायेगी,
 मेरा फन,^९ मेरा तख्त्युल^{१०} मेरे नाजुक अफकार^{११}
 ऐश की सर्द फ़िजाओं में ठिठुर जायेंगे,
 गीत—तारों के, शरारों के, चमनजारों के^{१२}
 जिनको पहनाना है अलफ़ाज़ के मलबूस^{१३} अभी
 तेरी आग़ोश में^{१४} घुट-घुट के वो मर जायेंगे
 साज ही साज है महफ़िल तेरी, आग़ोश तेरी

१. रंग तथा सुगंधि । २. भारी बोझ । ३. भावुक । ४. प्रसन्नता रूची शयन गृह
 ५. प्रेम-पियासा ६. प्रज्वलित । ७. दीप्तिमान । ८. मौवन । ९. केशों तथा
 कपोलों में । १०. कला । ११. कल्पना । १२. रचनाएँ । १३. बागों के । १४. शब्दों
 के वस्त्र । १५. बाहु पाश में ।

जीस्त^{१०} गर सोज नहीं कुछ भी नहीं कुछ भी नहीं ,
सोचता हूँ तेरी महफ़िल से चला जाऊँ मैं ।

दो सीन

(१)

शायर ने इक गीत सुनाया
वज़म^१ पे जैसे मस्ती छाई,
पायल छनकी—सागर छलका
इश्क़ ने ली फिर से अंगड़ाई,
हुस्न के रख से^२ आंचल ढलका
दूर उफ़क़ पर^३ तारे नाँचे
होशरुवा^४ नज्जारे नाचे
दुनियाँ सारी वज़द^५ में आई

(२)

शायर ने इक गीत सुनाया
वज़म में जैसे आग लगाई,
रँग रँग में बेताब शरारे
धागी ने तलवार उठाई,
बंह निकले फिर खून के घारे
ऐवानों पर लर्जा तारी^६,
सुलतानों पर लर्जा तारी,
दुनिया में इक आंधी आई।

१. महकिल। २. मुंह से। ३. क्षितिज पर। ४. होश उड़ा देने वाले। ५. उन्मत्तता। ६. महल काँप रहे हैं।

जब और अब

मेरी निगाह रही सूए-आस्मां^१ जब तक
 मेरे खयाल भटकते रहे फिजाओं में^२ ।
 महो-नुजूम को^३ क्या जाने मैंने क्या समझा
 तबहुमात की^४ महफ़िल सजी खलाओं में^५
 रहे दुरूदो-मुनाजात^६ तश्ना होंटों पर
 पढी नमाज गमे-जिदगी की छावों में ।
 मेरे खयाल पे छाये हुए थे हूरो-कुसूर^७
 मेरा शुमार^८ था दुनियाँ के पारसाओं में^९

शऊर^{१०} जाग उठा मेने खुद को पहचाना,
 मुझे जमीन ने-इरफ़ां व आगही^{११} बरुशी,
 सियाह थी ये फिजायें ववस्फ़े-माहो-नुजूम^{१२} ।
 हक़ीर^{१३} खाक के ज़रों ने रोशनी बरुशी
 नया गुदाजे-तमन्ना, नया मजाक़े-नज़र^{१४} ।
 जुनूने-शौक़ ने^{१५} इक ताज़ा जिन्दगी बरुशी
 मेरे जमीर ने^{१६}, मेरे शऊर ने मुझ को
 खुद एतमादो-ओ-खुदारी-ओ-खुदी बरुशी^{१७} ।

१. आकाश की ओर । २. शून्य में । ३. चांद तारों को । ४. अमों की
 ५. शून्य में । ६. प्रार्थना स्तुति । ७. हूरो और महल । ८. गणना ।
 ९. सदाचारियों में । १०. अवचेतना । ११. ज्ञान तथा अतर्जानि । १२. चांद
 तारों के बावजूद आकाश फाला था । १३. तुच्छ । १४. नव दृष्टि ।
 १५. जिज्ञासा के उन्माद ने । १६. अंतरात्मा । १७. आत्म विश्वास, आत्म
 सम्मान तथा स्वाभिमान प्रदान किया ।

इंतिकाम

मैं किस से इंतिकाम लूं ?

ये सच है बेफसों के सूँ से सुखं हो गई जर्माँ ,
मुसीबतों की दास्तां में सुन चुका है हमनशी^१ ।

मैं सुन चुका हूँ किस तरह बजुर्गों-नातवान भी^२
विलसते शीरस्वार^३ भी फुसुर्दा^४ नौजवान भी ,
अजल^५ के घाट एक-एक करके सब उतर गये ।

घरों की शाहजादियां-हरीमे-नाज की मकीं^६
(जो इपफर्ते^७ गंवा चुकीं, जो अस्मते^८ लुटा चुकीं)
भटक रही हैं दरबदर

वरहना पा, वरहना सर^९ ।

मैं सुन चुका हूँ हमनशीं ये दास्ताने-दिल-खरास^{१०} ।

मगर किसे मैं दोष दूं ?

मैं किस से इंतिकाम लूं ?

तवाहियों की गोद के पले हुए किसान से ?

कि जंगे इंकिलाब के सिपाही, नौजवान से ?

गरीबों-नातुवान से ?

नहीं, नहीं !!

१. खून । २. साथी । ३. बूढ़े और कमजोर भी । ४. दूध पीते बच्चे ।
५. उदासीन । ६. मृत्यु । ७. लाड़ की चारदीवारी की निवासी ।
८. ९. स्तीत्व । १०. नगे पंर नंगे सिर । ११. दिल को छीलने वाली कहानी ।

ये सब मेरे अजीज^१ हैं, ये सब मुझे अजीज हैं^२
में किस से इंतिकाम लू ?
बता किसे मैं दीप दूँ ?
चमन में किसने आग दी है मौसमे-बहार में
इक अजनबी सफ़ेद हाथ-आतशीं ओ-शोलाबार^३
फ़िज़ाए-तीरा-ए-वतन मे^४ रवस^५ कर रहा है आज

१. सम्बंधी । २. प्रिय । ३. अग्नि चपक । ४. देश के अंधेरे वातावरण में
५. नृत्य ।

मोड़

पसे-हिजाव^१ अभी तक हैं कितने नज्जारे,
उफ़क^२ के पार हैं रक्सां^३ हजार सदयारे^४ ।

कदम बढ़ा जरा जल्दी कदम बढ़ा हमदम^५
कि कारवाने-तमन्ना^६ है सुस्त गाम अभी^७,
जवीने-मेह पे^८ छाई है जुल्मतों की^९ गर्द
निगारे-सुबह में गलतां है^{१०} रंगे-शाम अभी ।
बहारे-लाला-ओ-गुल है खिजां बदोश हनोज^{११}
मजाक़े-वालो-परी है असीरे दाम अभी^{१२} ।
हयात आज भी जहमत-कशे-हुदूदो-कुयूद^{१३}
खिरद^{१४} भी खाम^{१५} अभी है जुनू^{१६} भी खाम अभी ।
हजार सदियों ने छोड़े हैं रंगारंग नुकूश^{१७}
मगर फ़साना-ए-हस्ती है नातमाम अभी ।

नया जहान, नई जिदगी, नया इन्सान,
जमीं पे करना है जन्नत का एहतिमाम^{१८} अभी ।

१. पदों के पीछे । २. क्षितिज । ३. नृत्य करते हुए । ४. नक्षत्र ।
५. साथी । ६. मनोरथ रूपी कारवां । ७. मन्थरगति से चल रहा है ।
८. सूर्य के माथे पर । ९. अंधेरो की । १०. सुबह के रंग में मिला हुआ है ।
११. अभी वसन्त ऋतु के काधे पर पतझड़ सवार है । १२. अभी बाल तथा
बंद रखने का ज्ञान जाल में फसा हुआ है । १३. जीवन आज भी विभिन्न
सोनाओं में सीमित है । १४. मेधा । १५. अपक्व । १६. उन्माद । १७. बित्त,
धन । १८. जीवन (अस्तित्व) की कहानी । १९. आयोजन ।

जेल में किसी का खत पाकर

फ़स्ले-बहार^१ में भी असीरे-क़फ़स^२ हूँ मैं,
 गुलज़ार^३ की फ़िजा^४ को मेरा इन्तिजार है ।
 रंगे-फ़ेवकोश^५ को है मेरी जुस्तजू,
 बूए-गुरेज़पा^६ को मेरा इन्तजार है ।
 तकते हैं मेरी राह ख्यावाने-कैफ़ खेज^७,
 दस्ते-जुनूं फ़जा^८ को मेरा इन्तिजार है ।
 जैसे फ़ुसुर्दा^९ हो गई बज़में-सदा-ओ-साज,^{१०}
 याराने खुशनवा को^{११} मेरा इन्तिजार है ।
 सूने पड़े हैं मिबरो-महरावे-मैक़दा^{१२},
 रिदाने-बासफ़्रा^{१३} को मेरा इन्तजार है ।
 ऐ दोस्त ग़म के गहरे अंधेरे में आज भी,
 इक अख़्तरे-बफ़्रा^{१४} को मेरा इन्तिजार है ।
 ये और बात है कि वो मुंह से न कह सके,
 उस पैकरे-हया^{१५} को मेरा इन्तिजार है ।

१. वसंत ऋतु । २. पिंजरे में बंद । ३. बाग । ४. वातावरण । ५. वह रंग जो फरेब देने का यत्न करता है । ६. शीघ्र निकल जाने वाली सुगंधि । ७. आन्दोलोत्पादक वाद्य । ८. उन्मादोत्पादक जंगल । ९. उदासीन । १०. सगीत सभा । ११. सुक़ष्ठ मिर्चों को । १२. भद्रशाला की महरावों और मिबर (जो वास्तव में मस्जिद के होते हैं) । १३. निर्मल हृदय । १४. बफ़्राओं के हारे (प्रेमिका) को । १५. लज्जा की मूर्ति ।

है मेरे इन्तिजार में गेसूए-शाम खेज^१,
चदमे सहरनुमा^२ को मेरा इन्तिजार है ।
अब भी खुला है बाबे-हरम^३ मेरे वास्ते,
अब भी मेरे^४ खुदा को मेरा इन्तिजार है ।

१. संध्या रूनी केत । २. सुबह रूनी बाँस । ३. स्वर्ग का दरवाजा ।
४. सम्यता तथा विकास ।

दीवाली

‘वकार’ रुह के तारों को क्यों छुआ तुम ने
तुम्हारी नज़म ‘दीवाली’ बहुत ही अच्छी है,
मगर, ये रात की गर्दन में दीप-मालाएं
सियाहियों में उजाले के बदनुमा घब्रे,
गरीब हव्शी को जैसे जजाम^१ हो जाय,
ये टिमटिमाते दिये ।

ये टिमटिमाते दिये सुबह का बदल तो नहीं,
में सोचता हूं कि इस रात चीनो-बर्मा में
किसी महाज पे कितने दिये जले होंगे ?
जवान खून की हर बूंद इक किरन बत कर
इक ऐसी सुबह की तशकील^२ कर रही होगी
हजार सदियों की तारीको तीरा^३ रातों में
बनी रही है जो इन्सां के ख्वाब का मरकज^४
वो सुबह दूर नहीं ।

अंधेरी रात के सीने से नूर का चश्मा
उबलने वाला है ।

ये टिमटिमाते दिये, लक्ष्मी के चरनों में
सभी ने हुस्ने-अक्रीदत^५ के फूल डाले हैं

१. कुष्ठ रोग । २. विधामत । ३. अंधकारमय । ४. कोई ।
५. शब्दा ।

वो जिन को लक्ष्मी देवी से कुर्बे-खास^१ नहीं
घरों में अपने भी दीपक जलाये बैठे हैं,
शिकस्ता^२ क्षोपड़ियों को सजाये बैठे हैं,
कि इस तरफ भी इनायत की इक नजर हो जाय
मगर वे भूलते हैं ।

शिकस्ता क्षोपड़ियों, टूटे-फूटे खंडरों में
कभी भी लक्ष्मी देवी न मुस्कायेगी,
कभी वहार न इनके चमन में आयेगी
अगर वे खुद ही निजामे-चमन^३ न बदलेंगे ।

सिपाहियों के नुमाइंदे,^४ रात के बेटे
हमारे फिक्रो-तखइयुल^५ को बांधने के लिए
तवहुमात^६ की जजीरें ढाल लेते हैं,
कभी दीवाली, कभी शब्वरात आती है ।

१. विशेष-सम्बन्ध । २. टूटी-फूटी । ३. वाग (संगार) की व्यवस्था
४. अधेड़ों के प्रतिनिधि । ५. चित्तन तथा पल्पना । ६. भ्रमों की ।

मिस्र'

कितनी सदियों से अबुलहील पे तारी था जमूद^२,
जैसे अहराम के साये में पड़ा सोता था,
अह्दे-हाजिर का^३ अबुलहील, फ़रंगी जरदार^४,
वादीए-नील^५ में तखरीब^६ का बिस बोता था।

जिस तरह रूप भरे खिज़^७ का कोई रहजन^८,
चेहरा-ए-जब्र पे^९ थी हुस्ने-तअल्लुक^{१०} की निक्काव,
कितने यूसुफ़ बिके सरमामे के बाजारों में,
लुट गया कितनी जुलेखाओं का अनमोल शबाब।

आज इदराके-हकीकत की मसीहाई से^{११},
जाँ पड़ीं जजबा-ए-मिल्ली^{१२} की ममी में जैसे,
जंगे-आजादी ने ऐ दोस्त किया है पैदा,
रब्ले-ताजा^{१३} अरबी और अजमी में^{१४} जैसे।

१. मिश्र देश । २. शैथिल्य । ३. वर्तमान काल का । ४. पूंजीपति ।
५. नील की वादी (मिश्र देश) । ६. ध्वंस । ७. पथप्रदर्शक । ८. डाकू
९. दमन के चेहरे पर । १०. सुन्दर सम्बन्ध । ११. वास्तविकता के ज्ञान के
चमत्कार से । १२. घम की भावना । १३. नया सम्बंध । १४. अरब निवा-
सियों में और उनमें जो अरब निवासी नहीं हैं ।

अब तहफ़फुज^१ के तराने हों कि इमदाद के राग,
 "कोई जामा^२ हो छुपेगा नहीं क़द का अंदाज़",
 गीत के बोल बदल जाने से क्या होता है ?
 वही अफ़रीत^३ का नग़मा वही इवलीस^४ का साज़ ।

साफ़ बतलाते हैं ये अहले-जुनूँ के^५ तेवर,
 सरनगूँ^६ होने को है तौक़ो-सलासिल का निज़ाम^७,
 मुंतिजर नील है खोले हुए मौजों का किनार,
 आज फ़िरख़ौन फ़रंगी है तो मूसा है अवाम^८ ।

१. रसा । २. पहरावा ३. भूतपरेत । ४. शैतान । ५. उन्मत्त प्राणियों
 । ६. नतमस्त्वक । ७. फंदों तथा जंजीरों की व्यवस्था । ८. जनता ।

निशाते सानिया

रात जंजीरे-कहकशा^१ पहनाये
 सुवहे-नौ^२ क़ंद हो नहीं सकती,
 मौत सय्याद^३ बन तो सकती है
 जिन्दगी सैद^४ हो नहीं सकती,
 वक्त के तुंदो-तेज धारे को
 कौन हां कौन मोड़ सकता है ?
 रहरवे-शोक^५ और मंजिल के
 रव्त^६ को कौन तोड़ सकता है ?
 देख मशरिफ़ के खारजारों में^७
 रंगो-नकहत की कारफ़माई^८,
 जो रहा मसकने-खजां^९ सदियों
 उस गुलिस्तां में फिर बहार आई।
 सुख परचम के^{१०} फूल खिलते हैं,
 खू शहीदों का रंग लाया है,
 क़सरों-ऐवां^{११} हैं बोंम के^{१२} मसदन
 क्षोपड़ों पर हुमा^{१३} का साया है,

-
१. पुनर्जन्म । २. आकाश गंगा की जंजीर । ३. नव-प्रभात । ४. अहेरी ।
 ५. आखेट । ६. प्रेमार्ग के पथिक । ७. सम्बन्ध । ८. कंटीले क्षेत्रों में । ९. रंग
 तथा सुगन्धि की कार्यवाही । १०. पतझड़ का घर । ११. झड़े के । १२. महल ।
 १३. उल्लू । १४. एक कल्पित पक्षी जिसे शुभ माना जाता है ।

उनके हाथों में आज ताकत है
 जो जमीनो-जमां' के मालिक हैं,
 खून से अपने सींचने वाले
 अस्ल में गुलिस्तां के मालिक हैं।
 एक ताजा निजाम^२ आता है
 हर मुदावा-ए-एहतियाज' लिए,
 कारखानों में ढेर रेशम के
 खेतियां झोलियों में नाज लिये,
 मौत के सदाँ-तीरा^४ साये में
 देख नक्शे-बक्का^५ उभरता है,
 चीन और कोरिया के खंडहरों से
 इक नया एशिया उभरता है।

१. धरती-आकाश । २. जीवन-व्यवस्था । ३. आवश्यकताओं, ..
 ४. ठंडे तथा अंधकारमय । ५. स्थायी जीवन का रेखाचित्र ।

याद

किसी की याद जब आई तो इस तरह आई ,
 अंधेरी रात में जैसे चिराय जल जायें ।
 वो उनकी जुल्फ़े-मुअंबर^१ कि मुश्क नाब खजिल^२ ,
 वो उनके आरिजे-रंगीं^३ कि फूल शर्मायें ।
 निगाह महरमे राजे-दरूने मँखाना^४ ,
 उढे जो आंख तो सागर छलक-छलक जायें ।
 लवों पे हाय तबस्सुम^५ की कारफ़रमाई ,
 शफ़क़^६ में बक़ं की मौजें मचल मचल जाये ।
 गले का लोच हरीफ़ेन-वाए-चंगो-रबाब^७ ,
 करें वो घात तराने फ़िजा में लहरायें ।
 शिकन जवी^८ पे पड़े इंक़िलाव आ जाये ,
 निगाह बदले हवाओं के रुख बदल जायें ।
 अगरचे यूं तो निहायत मतोनों—संजीदा^९ ,
 शरारतों पे जो आयें कयामतें ढायें ।
 वो उनका तर्जे-तयाफ़ुल^{१०} कि इल्तिफ़ात निसार ,
 मुझे तलब न करें इन्तिजार फ़र्मायें ।

१. ऐसे सुगन्धित केस कि कस्तूरी की महक लज्जित हो । २. रंगीन कपोल
 ३. नजर । ४. मधुशाला के भीतरी भेदी की भेदी है । ५. मुस्कान । ६. अंतरिक्ष
 में बिजली की लहरें । ७. जंग तथा रबाब नाम के बाजों के स्वर की
 प्रतिध्वनि । ८. भाषा । ९. गम्भीर । १०. विमुखता का ऐसा ढंग कि जिस
 पर आकृष्टि न्योछावर की जा सकती है ।

ये एहतिघात का आलम कि इतने कमआमेज^१
 करीब आये तो कुछ और दूर हो जायें ।
 मेरे सयाल को, मेरी नवा^२ को कूद करें,
 और इस तसरुफ़े-ब्रेजां पे^३ नाज़ फ़र्मायें ।
 वो मेरी जिद पे मेरे शेर गुनगुना देना,
 चमन में जैसे वहारों के राग छिड़ जायें ।
 दमे-विदाम^४ निगाहों का वो लतीफ़ पयाम^५,
 तुम आना लौट के इक दिन जो हम न आपायें ।

१. कम मिलने जुलने वाले । २. स्वर । ३. अनुचित अधिकार पर ।
 ४. बिछुड़ते समय । ५. मधुर संदेश ।

कुछ अपने मुतअल्लिक

दयारे-जुहद^१ छोड़ा और मैखवारों में आ पहुंचा ,
 गुनाहे-जीस्त^२ की खातिर गुनहगारों में आ पहुंचा ।
 मेरे देरीना-हमदम^३ खूब थे पर ये हकीकत है ,
 सबाबित से^४ गुजर कर आज सय्यारों में आ^५ आ पहुंचा ।
 गुलिस्तानों में रहता था खिजां के जीर^६ सहता था ,
 बयावानों में आ पहुँचा जुनूं जारों में^७ आ पहुंचा ।
 शविस्तानों के रुवाब-आवर मनाजिर^८ कल की बातें थीं ,
 सहर के जांफिजा बेदार नज्जारों में^९ आ पहुंचा ।
 जो तालिब है सुकूने-जिदगी^{१०} उनको मुबारक हो ,
 हलाके-जुस्तजु^{११} था मैं कि आवारों में आ पहुंचा ।
 नजर को खीरा^{१२} कर सकती थी सीमो-जर की तावानी^{१३} ,
 नजर पलती है जिनमें ऐसे नज्जारों में आ पहुंचा ।
 मैं बेगाना था यजदां के^{१४} परस्तारों की महफ़िल में ,
 गनीमत है कि इन्सां के परस्तारों में आ पहुंचा ।
 उरूसे-जिदगी की^{१५} नाजवरदारी का सौदा^{१६} था ,
 उरूसे जिदगी के नाजवरदारों में आ पहुंचा ।

-
१. संयम रूनी देश । २. जीवन रूपी पाप । ३. पुराने मित्र । ४. जड़ नश्वरों से । ५. गतिमान ग्रहों में । ६. अत्याचार । ७. उन्माद स्थलों में । ८. दयानागरो के तंद्रिल दृश्य । ९. प्रभात के प्राणोत्पादक जाग्रत दृश्यों में । १०. जीवन की दान्ति । ११. जिशासा-पीड़ित । १२. चकित सोने चादी की घमक । १४. खुदा के । १५. जीवन-रूनी नव-वधू की । १६. उन्माद ।

अगर यह जिदगी से प्यार भी इक जुम है फिर तो ,
गुनहगारों में आ पहुँचा खतावारों में आ पहुँचा ।
भटकता फिर रहा था दर-ब-दर और कू-ब-कू 'तावां' ,
यह यारों का तसरेक^१ है कि मैं यारों में आ पहुँचा ।

१. अपराधियों में । २. गली-गली । ३. देन, कृपा ।

नज़म एक

मानिन्दे - जामे' दौर में 'तावां' रहे है हन,
 यानी हरीक्रे-गदिसो-दौरां' रहे है हन।
 किस-किस घमन में गुंजी हमारे नदर-दौरां',
 फूलों को अंजुमन में छुड़कवां रहे है हन।
 निकला है जब जख्मे-दहरां' सन्-सन्,
 सर्वे-रवां' के साथ डिगनां' रहे है हन।
 दौरे-खिजां' में मोहमे-दौरां-दौरां' में,
 नामूसे-गुलसितां' को' निन्दकं' रहे है हन।
 निकले हैं घर को छोड़ के दिन दन पूरुं के राव,
 मेहमान-दस्तो-गार-मुसोला' रहे है हन।
 क्या पूछते हों उदर-गार' के सख्तों',
 कांटों पे फजो-शौक के मूलां' रहे है हन।
 तेरा भला हों बंदे-शर्मिंदे' कि मुदरों',
 वावस्ता - ए-शर्मिंदे - शिन्दे' रहे है हन।

अक्सर किया है राहे - तरीकत से इनहिराक^१,
 अक्सर शरीके - महफिले - रिन्दा^२ रहे हैं हम।
 शार्हों को भी निगाह में लाते नहीं मगर,
 खिदमतगुजारे - वादाफरोशां^३ रहे हैं हम।
 जिस शब हुआ है चदमा-ए-तसनीम^४ पर गुजर,
 उस रात एक हूर के मेहमां रहे हैं हम।
 उस चश्मे - हीला - साजो - लबे - हीलागर^५ की खैर,
 आवारा - ए - तवारो - वदहशां^६ रहे हैं हम।
 दैरो - हरम^७ की राह से गुजरे तो वार-वार,
 तंगी - ए रहगुजर^८ से परीशां रहे हैं हम।
 मकसूद कुफो^९ - हासिले - ईमां है जिन्दगी,
 काफिर रहे है हम न मुसलमां रहे हम।
 इल्मो - गुमां^{१०} पे तंग था जब अर्सा-ए-वुजूद^{११},
 वहमो - गुमां से दस्तो - गरेवां रहे हैं हम।
 हर ताजा वारदात^{१२} से निसवत^{१३} हमें भी है,
 हर ताजा इन्किलाव के उनवां^{१४} रहे हैं हम।

१. धर्म की अवज्ञा। २. मद्यपो की महफिल में शामिल। ३. शराब
 बेचने वालों के सेवक। ४. तसनीम (जघनत की एक नदी) के चश्मे (मयू-
 घाला) पर। ५. आँखों तथा होठों से बहाने करने वाली (प्रेमिका)।
 ६. तातार और वदहशां (प्राचीन तुर्किस्तान तथा अफगानिस्तान) में (सह-
 ज़ादों की तरह) आवारा फिरने वाले। ७. मन्दिर, मस्जिद। ८. मार्ग
 की तंगी। ९. हमारे जीवन का उद्देश्य कुफ़ (अधर्म) और ईमान (धर्म) की
 प्राप्ति है। १०. ज्ञान तथा संदेह। ११. अस्तित्व का मैदान। १२. नई
 घटना। १३. संबंध। १४. क्षीर्षक।

अल पत्थर

रास्ता आइना - दारे - वरहमीए - जुल्फे - दोस्त ,
कोह के संगीत शानों पर पड़ा था खम बखम ,
यक तरफ इतनी बुलंदी, यक तरफ इतना नशेब^२ ,
पत्थरों में ढल गया था जिदगी का जेरो-बम^३ ।

जैसे साजिश कर रहे थे अब्रो-वादो-संगो-खार^४ ,
इम्तिहाने - जुर्रते - नाआजमूदाकार था^५ ,
उस तरफ़ फ़ितरत मुजाहिम इस तरफ अजमे-तमाम^६ ,
हर नफ़स^७ इक जहद^८ था हर गाम^९ इक पैकार^{१०} था ।

जितनी उफ़तादे^{११} पड़ीं सोजे-तलब बढ़ता गया ,
शौक को हर मरहला इक ताजियाना^{१२} हो गया ,
लाख फ़ितरत ने छुपाया आदमी से अपना राज ,
फिर भी वो सैदे-निगाहे-आरिफाना^{१३} हो गया ।

१. मार्ग मानो प्रेमिका के बिखरे केशों-का प्रतीक (बना) पर्वत के पत्थरोंले कंधों पर पेच दर पेच पड़ा था । २. गहराई । ३. ऊँच-नीच । ४. बादल, वायु, पत्थर, काटे । ५. अनुभवहीन व्यक्ति के साहस की परीक्षा थी । ६. प्रकृति वाचक थी । ७. दूढ़ संकल्प । ८. श्वास । ९. चेष्टा । १०. पग । ११. संग्राम । १२. कठिनाइयाँ । १३. कौड़ा । १४. ज्ञाता की नजरों का आखेट ।

दामने - कुहसार पर^१ रंगे - खिजां की आवो - ताब ,
जिसके आगे सरनिगूं^२ बहजादो-मानी के कलम^३ ,
आजरे-फ़र्दा की^४ चाबुक दस्तियों के मुंताज़िर ,
एक एक पत्थर में कितने नातराशीदा सनम^५ ।
बर्फ़ का टीका दमकता था जवीने-कोह पर^६ ,
बादलों के दोश पर^७ गेसू^८ थे लहरामे हुए ,
जिन की आराइशों में महब^९ हो जैसे कोई ,
इस्क की तसखीर^{१०} के जज्वों की सह पाये हुए ।
शील की ठंडी हवायें गुदगुदाती, छेड़ती ,
तेज झोंका जब कोई आ जाये पानी मुस्कराए ,
शोरिशे-हर मोज में गलतां हजारों जमजाये^{११} ,
जैसे मांशी रात को झेलम किनारे गीत गाये ।
ये मनाज़िर जिनका परती^{१२} है मेरा जीके-जमाल^{१३} ,
इन को मेरे फ़िक्र की^{१४} मशशातगी^{१५} दरकार है ,
जान सी पड़ जाय इन रंगीन नज़्जारों में आज ,
इक जरा सीजो-गुदाजे-ज़िदगी^{१६} दरकार है ।

१. पर्वतमालाके अंचल पर । २. नतमस्तक । ३. इरान के दो प्रसिद्ध चित्रकार । ४. आने वाले आजर (हज्जत इब्राहीम के चचा का नाम जो मूर्तिकार थे) की । ५. धनघड़ मूर्तियां । ६. पर्वत के माथे पर ७. कंधे पर । ८. केश । ९. शृंगार में लीन । १०. बशीकरण । ११. हर उत्तेजित लहर में हजारों राग डूबे हुए । १२. प्रतिरूप । १३. सौंदर्य की अनुभूति । १४. चिंतन । १५. बनाव-शृंगार । १६. जीवन का माघुयं ।

रोशन हैं बजमे - दह में मिस्ले - चिरागे - तूर^१,
ये और बात है तहे - दामां^२ रहे हैं हम ।

१. हम तूर (एक पहाड़ी का नाम जिस पर हज़रत मूसा ने सुदा से बातें की थीं) के दीपक की तरह संसार में प्रकाशमान हैं । २. (पहाड़ी के) दामन तले ।

नज़्म दो

सर - ताव - क़दम^१ एक हसा-राज^२ का आलम^३ ।
 क्या कहिए किसी फ़ितनागरे - नाज^४ का आलम ?
 जुल्फ़ों में वो बरसात की रातों की जवानी,
 आरिज^५ में वो अनवारे - सहर - साज^६ का आलम ।
 उनवाने - सखुन^७—'ग़ालिवो' - 'मोमिन' का तग़ज्जुल^८,
 अन्दाजे - नज़र^९—बादा - ए - शीराज^{१०} का आलम ।
 दुजदीदा निगाहों में^{११} इक इलहाम^{१२} की दुनिया,
 नाजुक से तबस्सुम^{१३} में इक एजाज^{१४} का आलम ।
 हर जु'बिशे - अबरू^{१५} में महाकात^{१६} के दफ़्तर,
 कुछ सोज का आलम है तो कुछ साज का आलम ।
 उलझे हुए जुमलों में शरारत भी हया^{१७} भी,
 जज़्वात में डूबा हुआ आवाज का आलम ।
 इस सादगी ए हुस्न में किस दर्जा फ़शिश^{१८} है,
 हर नाज में इक जज़्वा ए ग़म्माज^{१९} का आलम ।

-
१. सिर से पाँव तक । २. सुन्दर भेद । ३. स्थिति । ४. जो अपने नाज और अदा से उपद्रव पैदा कर दे । ५. कपोली में । ६. प्रभात का प्रकाश । ७. शायरी का शीर्षक । ८. काव्यमयता । ९. देखने का अन्दाज़ । १०. ईरानी शराब । ११. चोर नज़रों में (कटाक्ष) । १२. ईश्वरीय संकेत । १३. मुस्कान । १४. चमत्कार । १५. भूकुटी के प्रत्येक स्पदन में । १६. वात्तलाप । १७. संकोच । १८. आकर्षण । १९. संकेत की भावना ।

उस सैद^१ को क्या कहिए जो खुद आये तहे दाम^२,
दिल में लिए इक हसरते परवाज^३ का आलम ।
कुवंत^४ भी है दूरी भी है, अब क्या कोई समझे,^५
अजाम का आलम है कि आगाज^६ का आलम ।
यूं तो न तसाहुल^७ न तजाहुल^८ न तगाफुल^९,
कुछ और है इस काफ़िरे तन्नाज^{१०} का आलम ।
शेखी में, शरारत में, मतानत^{१०} में, हया में,
जो राज का आलम था वही राज का आलम ।

१. आखेट । २. जाल में । ३. उड़न की अभिलाषा । ४. सामीप्य ।
५. शृङ्गात । ६. उदासीनता । ७. अज्ञानता । ८. उपेक्षा । ९. चंचल
प्रेमिका । १०. गंभीरता ।

नंजम तीन

ये हुक्म बारगहे इश्क से^१ मिला 'तावा'^२
 फरेबे लुत्फ न खा^३ उसकी अंजुमन^४ से गुजर।
 दिलों का सोज, नवाओं को^५ साज देता है,
 जहां खुलूस न हो मिनते-सखुन^६ से गुजर।
 वफा की वू है गुलों मे^७ न एतवार का रंग,
 असीर वहमे वहारा^८ न हो चमन से गुजर।
 जरा उठा तो जमाने की तेज घूप का लुत्फ,
 गुजर भी - साया - ए गेसुए पुरशिकन से^९ गुजर।
 कहां नसीब चमन में फरागते सहरा^{१०},
 जुनूं में^{११} सोहबते - नसरीनो - नस्तरन से^{१२} गुजर।
 ये मौत है कि तू इक आस्तां^{१३} का हो जाये,
 वो जिन्दगी है कि हर दस्त और दमन से गुजर।
 यही खायते किनआने इश्क^{१४} है ऐ दोस्त,
 कि आजमाइशे सद-बू-ए परहन से^{१५} गुजर।

-
१. प्रेम के सभास्थल से। २. प्रेम रूपी धोखा। ३. महकिल।
 ४. स्वर को। ५. वातचीत करना। ६. फूलों में। ७. बसन्त के भ्रम में
 प्रसन्न। ८. (प्रेमिका के) उलझे केशों की छाया से। ९. महस्थल की सी
 निवृत्ति। १०. उन्माद में। ११. फूलों (के नाम) के सहवास से।
 १२. चौखट। १३. जंगलों से। १४. प्रेम के नगर की परम्परा।
 १५. (प्रेमिका के) बस्त्रों की संकड़ों सुगंधियों के अनुभव से।

फिराके दोस्त तबीयत^१ न हो तो इस्क न कर,
 न आये खुश रमे आहू^२ तो फिर खतन^३ से गुज़र।
 छुपा है दामने गिरदाव^४ में दुरे हासिल^५,
 किनारे मौज^६ में आ साहिले यमन^७ से गुज़र।
 न हो कहीं तिरा पिदारे आशिकी मजरूह^८,
 फुगाने शोक^९ की रस्मो रहे कुहन^{१०} से गुज़र।
 मुकामे हिज्ज^{११} हो या मंजिले विसाले हबीब^{१२},
 जहां कहीं से गुज़र एक बांकपन से गुज़र।

-
१. प्रेमिका विछोह को सहनशीलता। २. हिरन का भागना।
 ३. खतन एक क्षेत्र जहां के हिरन मगहूर हैं। ४. भंवर के दामन में।
 ५. लक्ष रूपा मोती। ६. लहरों के बीच। ७. यमन के तट। ८. प्रेम
 करने का गौरव घायल न ही। ९. प्रेम में (द्विफल होने पर) विलाप करना।
 १०. पुरानी रीति। ११. विछोह रूपी मार्ग। १२. प्रेमिका में मिलने की मंजिल।

कृतआ

नहीं हैं लव मेरे आलूदा ए आहो फ़ुगां^१ 'ताबां',
 असर की बात क्यों पहुँचे खुदावंदाने^२ दिल्ली तक ।
 बहुत है फ़ासला यानी ख़लाये^३ ही ख़लायें हैं,
 जमीं गरदाने दिल्ली से फ़लक^४ ताज़ाने दिल्ली तक^५ ।
 ये माना हम अभी आवारा ए कू-ए-मलामत^६ हैं,
 खुदा के फ़ज़ल से पहुँचे हैं वो ऐवाने दिल्ली तक ।
 वो बेचारे मगर पेचो ख़मे सहारा से^७ क्या वाकिफ़,
 नजर महदूद^८ है जिनकी चमन ज़ाराने दिल्ली तक^९ ।
 मयस्सर सुहबते अहले जुनू^{१०} की है तो गम क्या है ?
 रसाई गर नही अपनी ख़िरदमंदाने दिल्ली तक^{११} ।
 निशाना बन नहीं सकता ये दिल सोने के तीरों का,
 मेरा पैगाम पहुँचा दो कमानदाराने-दिल्ली^{१२} तक ।
 'जवां उनकी है तुर्की और मे तुर्की मे नावाकिफ़'^{१३}
 पहुँच मेरी हो कैसे महफ़िले तुर्काने-दिल्ली तक ?

१. मेरे होंट आज़ांनाद से मलयुक्त । २. स्वामी । ३. शून्य । ४. दिल्ली
 की धरती से दिल्ली के आकाश तक । ५. भत्संना रूरी गली में आशारा
 फिरने वाले । ६. महस्पल के उन्से रास्तो मे । ७. सीमित । ८. दिल्ली के
 बागो तक । ९. उम्मत ध्यवित्तियों का संग । १०. दिल्ली के बुद्धिजीवों तक ।
 ११. दिल्ली के कमानदार ।

मुसाहिब^१ बन के कोई खिदमते-फन^२ कर नहीं सकता,
 मेरी आवाज जाये काश फनकाराने-दिल्ली तक^३ ।
 "नवारा तल्ख तरमीजन चू जीके-नगमा काम्याबी^४ "
 ये पैगामे-जुनु^५ पहुँचे नवासांजाने-दिल्ली^६ तक ।
 अगर मैं अक्ल की सुनता खुदा जाने कहाँ होता,
 जुनूने-शीक लाया खँच कर याराने-दिल्ली तक ।

१. प्रशंसक । २. कला की सेवा । ३. दिल्ली के कलाकारों तक । ४. अगर गीत में स्वाद न मिलता हो तो और कड़ुवे गीत गाओ । ५. उन्माद का संदेश । ६. गाने वाले ।

याद रहेगी

जालिम वो तेरी पहली नजर याद रहेगी,
 में भूलना चाहूँ भी मगर याद रहेगी।
 इक क्रांतिलो-मासूम अदा नक्श^१ है दिल पर,
 इक सादा-ओ-पुरकार नजर याद रहेगी।
 होंटों से छलकता हुआ नाजुक सा तबस्सुम,
 ताबिदगी - ए - सिलके - गुहर^२ याद रहेगी।
 वरसात का भरपूर समां याद रहेगा,
 जुल्फों की घटा तावा कमर^३ याद रहेगी।
 आराइशे - जेवाईशे जन्नत के नजारे^४,
 आसूदगी - ए - जोके - नजर^५ याद रहेगी।
 तजदीदे - मराआत के^६ दिलचस्प वहाने,
 हर "पुरसिशे - शम वारे - दिगर"^७ याद रहेगी।
 वो इस्क का मौसम, वो बहारों का जमाना,
 बालीदगी - ए - कंफ्रो - असर^८ याद रहेगी।
 हर रोज मनाते थे जहाँ जशने - मुल्लाकात,
 वो राहगुजर, राहगुजर याद रहेगी।
 गुलगश्ते - चमन^९, साहिले - गंगा के नजारे ;

१. अंकित। २. मोतियों की लड़ी की चमक। ३. कमर तक।
 ४. स्वर्ग की सज्जा के। ५. नजर की तृप्ति। ६. कृपाओं के मधीनीकरण के।
 ७. दो वार इस्क का हाल पूछना। ८. आनन्द की वृद्धि। ९. बाग के फलों की सैर।

आवारगी - ए शामो - सहर^१ याद रहेगी ।
 आजुर्दगी - ए - शोक^२ पे इक खास अदा से,
 तसकीं व इशाराते - नजर^३ याद रहेगी ।
 जुलमत कदा- ए - गम में जलाई थी जो तूने,
 हर सूद^४ में वो शम्मे - जरर^५ याद रहेगी ।
 पाबंदी - ए - आदावे मुहब्बत^६ पे वो इसरार,
 फहमाइशे - दुजदीदा नजर^७ याद रहेगी ।
 दिल अपनी हजीमत^८ को तो अब भूल चला है,
 हाँ दोस्त तेरी फतहो जफर^९ याद रहेगी ।
 जिस शाम मुझे तर्क मुहब्बत का^{१०} मिला हुक्म,
 वह शाम व उनवाने दिगर^{११} याद रहेगी ।
 गो छूट चुका मुझ से गुलिस्ताने फतेहगढ़^{१२},
 ता उम्र^{१३} तेरी ऐ गुले तर^{१४} याद रहेगी ।

१. मुवह शाम की आवारगी । २. खिन्नता । ३. नजर के
 संकेत में ढाढ़म देना । ४. दुख रूपी अंधेरे घर में । ५. लाभ ।
 ६. नुकसान का दीपक । ७. प्रेम की परम्पराओं की पाबन्दी ।
 ८. चोर नजरों की चेतवनी । ९. हार । १०. महान् विजय ।
 ११. प्रेम करने से याज आने का । १२. किसी अन्य शीर्षक से ।
 १३. कवि अपने सहर फतेहगढ़ को वाग कहता है । १४. लायु भर ।
 १५. मजल फूल ।

राजल एक

धमन वालों में ददराके-नमूँ बढ़ता ही जाता है,
मुबारिक हो रिवाजे-रंगो-नूँ बढ़ता ही जाता है ।
मलासिल भी है जिन्दा भी है दीवानों की राहों में,
मगर ऐ दोस्त नारे-हाये-हूँ बढ़ता ही जाता है ।
ये मंजिल की कनिश है या सजरे-जाश पैमाई ?
बहर मुश्किल मजाके-जुस्तुजूँ बढ़ता ही जाता है ।
फूजुरे-मूर्तगिब रिन्दों की येबाकी कोई देगे,
जवाबन हल्ता-ए-शामो-नुयूँ बढ़ता ही जाता है ।
गुमारे-हुगरने-दोनीना कंग्रा मात्र तो 'ताया',
बहर जुम्बूँ गुन्देभारतूँ बढ़ता ही जाता है,
मेरो याश परगो मूँ-इमत्रान है गाकी,
गिरद गानों की महतिन में नुनूँ बढ़नाम है गाकी ।

खुदा जाने तिरे रिंदों पे^१ क्या गुजरी कि महफ़िल में,
 न साजो-मीना है साकी, न रक्से जाम^२ है साकी ।
 जुनू में और खिरद मे दरहकीकत फ़कं इतना है,
 ये ज़ेर-दार^३ है साकी, वो ज़ेरे-दाम^४ है साकी ।
 अभी तो चंद कतरे ही मिले हैं तशनाकामों^५ को,
 मगर पीरे-मुगां की बज्म में कोहराम है साकी ।
 सुए-मंजिल^६ बढ़ा जाता है मैखाना ब मंखाना,
 मजाके-जुस्तुजू तशना लबी^७ का नाम है साकी ।
 निजामे-तशनाकामी^८ अब ज्यादा चल नहीं सकता,
 कि जो मैखाना पखर^९ है उसी का जाम है साकी ।
 अभी सूदो-ज़ियां^{१०} का कुछ-न-कुछ एहसास बाकी है,
 जुनू के हाथ में अब तक खिरद का जाम है साकी ।
 कभी दो-चार कतरे भी सलीके से न पी पाये,
 वो रिदे-ख़ाम^{११} हैं साकी, वो तंगे-जाम हैं साकी ।
 नहीं है आज भी शाइस्ता-ए-आदाबे-मैनोशी^{१२},
 वो इक रिदे-बलाकश^{१३} जिसका 'ताबां' नाम है साकी ।

१. मद्यपों पर । २. प्याले का नृत्य । ३. फांसी तले । ४. जाल
 तले । ५. प्यासों को । ६. मंजिल की ओर । ७. प्यास । ८. प्यास
 रखने की व्यवस्था । ९. मधुशाला का पला हुआ । १०. लाभ तथा हानि ।
 ११. प्याले के लिए लज्जा । १२. शराब पीने की शिष्टता से अनभिज्ञ ।
 १३. बहुत ज्यादा शराब पीने वाला ।

राजल एक

धमन वालों में इद्राकेन्म^१ बढ़ता ही जाता है,
 मुबारिक ही रिवाजे-रंगो-धू^२ बढ़ता ही जाता है।
 सलासिल^३ भी हैं जिन्दा^४ भी हैं दीवानों की राहों में,
 मगर ऐ दोस्त शोरे-हाये-हू बढ़ता ही जाता है।
 ये मंजिल की कशिश^५ है या शक्रे-जादा पैमाई^६ ?
 चहर मुश्किल^७ मजाके-जुस्तुजू^८ बढ़ता ही जाता है।
 हुजूरे-मुहतसिब^९ रिन्दों की^{१०} बेबाकी कोई देखे,
 जवाबन^{११} हल्का-ए-जामो-सुबू^{१२} बढ़ता ही जाता है।
 खुमारे-हसरते-दोशीना^{१३} कैसा आज तो 'तावां',
 चहर जुरअ^{१४} सुरेआरजू^{१५} बढ़ता ही जाता है,
 मेरी वादा परस्ती^{१६} मूदे-इलजाम^{१७} है साक्री,
 खिरद वालों की^{१८} महफिल में जुनू^{१९} वदनाम है साक्री।

-
१. विकास का ज्ञान। २. रंग तथा सुगंध की रीति। ३. जंजीरें।
 ४. जेलखाना। ५. आकर्षण। ६. अनदेखी राहों पर चलने की अनुभूति।
 ७. हर कठिनाई में भी। ८. तलाश की अनुभूति। ९. आलोचक।
 १०. मद्यपों की। ११. उत्तर में। १२. सुराही और प्याले का घेरा (मद्यों
 की संख्या)। १३. पिछली रात की अभिलाषा का खुमार। १४. हर पृष्ठ
 के माथ। १५. आकांक्षा का सहर। १६. दाराब की पूजा। १७. दूषित।
 १८. बुद्धिजीवों की। १९. उन्माद।

खुदा जाने तारे रिदों पे^१ क्या गुजरी कि महफ़िल में,
 न साजो-मीना है साकी, न रक्से जाम^२ है साकी ।
 जुनू में और खिरद मे दरहकीकत फ़कं इतना है,
 ये जेर-दार^३ है साकी, वो जेरे-दाम^४ है साकी ।
 अभी तो चंद कतरे ही मिले हैं तशनाकामी^५ को,
 मगर पीरे-मुगां की बज़म में कोहराम है साकी ।
 सुए-मंज़िल^६ बढ़ा जाता है मैखाना ब मैखाना,
 मज़ाके-जुस्तुजू तशना लबी^७ का नाम है साकी ।
 निज़ामे-तशनाकामी^८ अब ज्यादा चल नहीं सकता,
 कि जो मैखाना पखर^९ है उसी का जाम है साकी ।
 अभी सूदो-ज़ियां^{१०} का कुछ-न-कुछ एहसास बाकी है,
 जुनू के हाथ में अब तक खिरद का जाम है साकी ।
 कभी दो चार कतरे भी सलीके से न पी पाये,
 वो रिदे-ख़ाम^{११} हैं साकी वो नंगे-जाम हैं साकी ।
 नहीं है आज भी शाइस्ता-ए-आदावे-मैनोशी^{१२},
 वो इक रिदे-बलाकश^{१३} जिसका 'तावां' नाम है साकी ।

१. मद्यपों पर । २. प्याले का नृत्य । ३. फांसी तले । ४. जाल तले । ५. प्यालों को । ६. मंज़िल को ओर । ७. प्याल । ८. प्यास रसने की स्थिति । ९. मद्यशाला का पला हुआ । १०. लाभ तथा हानि । ११. प्याले के लिए लज्जा । १२. शराब पीने की शिष्टता से अनभिज्ञ । १३. बहुत ज्यादा शराब पीने वाला ।

दो

जलवा पाबंदे-नजर^१ भी है नजर साज^२ भी है,
पर्दा-ए-राज^३ भी है पर्दा-दरे-राज^४ भी है।
हमनफ़स^५ आग न लगे जाए कहीं महफिल में,
शोला-ए-साज भी है, शोला-ए-आवाज भी है।
यूँ भी होता है मुदावा-ए-गमे-महरूमी^६,
जब्रे-सय्याद^७ भी है हसरते-परवाज^८ भी है।
मेरे अफ़कार की रानाइयां^९ तेरे दम से,
मेरी आवाज में शामिल तेरी आवाज भी है।
मैं तो अंजाम की तल्खी भी गवारा कर लूँ,
हाय इस दर्द में कुछ लज्जते-आगाज^{१०} भी है।
जिन्दगी जीके-नमू,^{११} जीक-तलब,^{१२} जीक-सफ़र^{१३},
अंजुमन साज^{१४} भी है, गर्मे-तगो-ताज^{१५} भी है।
मेरे अफ़कारो-ख्यालात में जारी 'तावा'
हुस्ने-दिल्ली भी है रानाई-ए-शीराज^{१६} भी है।

१. दृष्टि का आबद्ध। २. दृष्टि का उत्पादक। ३. भेद का पर्दा। ४. भेद का पर्दा उठाने वाला। ५. सांघी। ६. वचित के दुख का इलाज। ७. आखेटक का अत्याचार। ८. उड़ने की अभिलाषा। ९. रचनाओं की सुन्दरता। १०. गुरू-शुरू का आनन्द। ११. विकास की प्रवृत्ति। १२. पाने की प्रवृत्ति। १३. यात्रा की प्रवृत्ति। १४. सभा की जन्मदाता। १५. भाग दौड़ में व्यस्त। १६. ईरान की सुन्दरता।

जुनु^१ खुदनुमा^२ खुद निगर^३ भी नहीं,
 खिरद^४ की तरह कम नजर भी नहीं।
 कोई राहजन^५ का खतर भी नहीं,
 कि दामन में गर्दे-सफ़र भी नहीं।
 यहाँ होशो इमां सभी लुट गये,
 मजा यह है उनको खबर भी नहीं।
 गमे जिदगी इक मुसलसल अजाव,
 गमे जिदगी से सफ़र^६ भी नहीं।
 नजर मोतबर है खबर, मोतबर,
 मगर इस क़दर मोतबर भी नहीं।
 तेरी अंजुमन मरकजे आरजू,
 तिरी अंजुमन में गुजर भी नहीं।
 कहां जाये 'तावा' गुनहगारे शौक^७?
 जफ़ा भी नहीं दरगुजर भी नहीं।
 फूचा-ए-शौक^८ रहे-फिक्रो-नजर^९ से गुजरे,
 नवशो-पा^६ छोड़ गये हम तो जिघर से गुजरे।
 बाज ऐ वहशते-दिल जाने किघर से गुजरे।
 कितने दिलचस्प थे मंजर जो नजर से गुजरे?
 हम भी मस्जिद के इरादे से चले थे लेकिन,
 मैकदे राह में हायल थे जिघर से गुजरे।

१. उन्माद । २. आत्मप्रदर्शक । ३. स्वाश्रित । ४. बुद्धि । ५. डाकू ।
 ६. प्रेम का अपराधी । ७. प्रेम रूपी प्याली । ८. देखने तथा सोने के मार्ग
 से । ९. पदचिन्ह ।

ये वो मंजिल है कि इलियास^१ भी गुम लिख^२ भी गुम ,
 हाय आवारगी-ए-शोक किघर से गुजरे ?
 कितनी अमवाजे-बला^३ पाओं की जजोर बनी ,
 कितने तूफाने-हवादिस^४ ये कि सर से गुजरे ।
 जाहिदो-शैख में क्या-क्या न हुई सरगोशी ,
 मंकेदे जाते हुए हम जो उघर से गुजरे ।
 आज 'तावां' दिले-मरहूम^५ बहुत याद आया ,
 वाद मुद्दत के जब उस राह गुजर से गुजरे ।
 कम निगाही^६ न सही गम निगाही^७ होगी ,
 इरक में दिल की बहर हाल तबाही होगी ।
 कैसे इटलाओगे तारीख को तुम रोजे-हिसाब^८
 फर्दे-इसियां^९ पे जमाने की गवाही होगी ।
 फंजे-मैखाना^{१०} अभी आम नहीं है वरना ,
 कौन है „जिसने मं-ए-नाध न चाही होगी ?
 जिसपे ओहामो -जहालत के^{११} पड़े हों पदे ,
 मोतबर „खाक वो महदूद निगाही^{१२} होगी ।
 इंकूलावात : की मंजिल है खिजर^{१३} से कह दो ,
 अब जुनूं राहनुमा^{१४} जिदगी राही होगी ।
 हम ने हर हाल में उस दुश्मने ; जां से 'ताबा'
 यूं निवाही कि किसी ने - न निवाही होगी ।

१. पैगम्बरो के नाम (पथ प्रदर्शक) २. विपत्तियों की लहरें ३. विपत्तियों के तूफान । ४. धर्मोपदेशक । ५. मृत हृदय । ६. अल्प दृष्टि । ७. गुस्से से देखना । ८. प्रलय के दिन जब भगवान सब का लेखा-जोखा लेगा । ९. वह कागज जिस पर तुम्हारे पाप लिखे होंगे । १०. मधुशाला की उदारता । ११. भ्रम तथा अज्ञानता के । १२. सोमित दृष्टि । १३. राह दिखाने वाले पैगम्बर का नाम । १४. उन्माद राह दिखायेगा ।

तीन

अपने तो फिर अपने हैं शरीरों का चलन बदला ।
 अंदाजे नजर बदला, उनवाने-सुखन^१ बदला ।
 दीवाने तो दीवाने खोये गये फरफाने^२,
 यूँ फरफले बहार आई यूँ रंगे-चमन बदला ।
 फिर दौर में सागर है फिर मौज में सहवा^३ है,
 मैखाना-ए-मशरिफ का दस्तूरे कुहन^४ बदला ।
 ऐ अहले चमन^५ मुजदा^६ सय्याद^७ हुए रुखसत,
 तफदीरे-चमन बदली आईने चमन^८ बदला ।
 जो कतरा है मोती है जो जरी है नाफा^९ है,
 दस्तूरे-अदन बदला, आईने-खुतन^{१०} बदला ।
 इरफाने-जुनू^{११} पाया या राजे-नमु^{१२} पाया,
 मएयारे-नजर^{१३} बदला हर नकशे-कुहन^{१४} बदला ।
 मगरिव का सितारा अब गर्दिश में है ऐ 'तावां',
 वो अपनी रविश बदले, दुनिया का चलन^{१५} बदला ।

१. वातचीत (कविता) का शीर्षक (डंग) । २. बुद्धिजीवी ।
 ३. लाल शराब । ४. पुरानी रीति । ५. बाग के रहने वाले । ६. मंगल सूचना ।
 ७. आरंभक । ८. बाग की व्यवस्था । ९. कस्तूरी । १०. मध्य एशिया
 की व्यवस्था । ११. उन्माद का ज्ञान । १२. विकास का भेद । १३. दृष्टि-
 कोण । १४. पुराना रूप । १५. चाल चलन-गति ।

शवावे-हुस्त है वकों-शरर^१ की मंजिल है
 ये आजमाइशे-कल्वो-नजर की^२ मंजिल है ।
 सवादे वकों-शरर^३ भी वशर^४ की मंजिल है,
 अभी. तो पर परवरिशेवालो की^५ मंजिल है ।
 कदम बढ़ाये हुए शव नसीव^६ हम सफ़रो,
 बहुत करोब निगारेसहर^७ की मंजिल है ।
 ये मैकदा है कलीसा-ओ खानकाह^८ नहीं ।
 उरजेफिक्रो-फरोगे नजर की^९ मंजिल है ।
 हमें तो एक ही आई फुगा की वे असरी^{१०},
 मगर बताओ तो कोई असर की मंजिल है ।
 वो रहबरी-ए-जनावे खिजर की^{११} मंजिल थी,
 ये रहनुमाई-ए-फिक्रे वशर की^{१२} मंजिल है ।
 ये राज पा न सके साहिवा-ने-होशों खिरद,
 जुनूं भी इक निगहे-पर्दा दर की मंजिल है ।
 क्याम शामिले मश्के-खराम है^{१३} तांवां,
 सफर का तक भी गोया सफ़र की मंजिल है ।

१. बिजली और चिगारी की। २. दिल तथा दृष्टि की परीक्षा की। ३. बिजली और चिगारी के 'आस' पास। ४. मनुष्य। ५. बालों और परों के। ६. जिनके भाग्य में रात थी। ७. सुबह की मूर्ति। ८. गिरजा. या संन्यासियों का मठ। ९. सोचने तथा देखने के उत्थान की। १०. प्रभावहीनता। ११. पैगम्बर (पय-प्रदर्शक) महोदय के पय-प्रदर्शन की। १२. मनुष्य के वितारक पय-प्रदर्शन की। १३. रुकना भी चलने के अभ्यास का अंग है।

चार

हज्वे-मय रस्मो-रहे-दुनिया^१ की पावंदी भी है,
गालिबन कुछ शैल को जोमे-खिरदमंदी^२ भी है।
बिजलियों से साजिशें भी कर रहा है वागवां,
हम चमन वालों को हुक्मे आशियाबंदी^३ भी है।
हज़रते-दिल को खुदा रखे वही हैं शोरिशे^४,
ददें-महकूमि^५ भी सोजे-आरजूमन्दी^६ भी है।
मैकदे की इस्तलाहें^७ भी बहुत कुछ कह गये,
वरना इस महफ़िल में दस्तूरे-जुबांबंदी^८ भी है।
उनके जलवों की फ़ुसूंकारी^९ मुसल्लम^{१०} है मगर,
कुछ निगाहे-शौक की इसमें हुनरमन्दी भी है।
उस ने 'ताबां' कर दिया आजाद ये कह कर कि जा,
तेरी आजादी में इक शाने नजरबंदी भी है।

-
१. धरातल की बुराई, संसार की नीति। २. बुद्धिमत्ता का अभिमान।
३. घोंसला बनाने की आज्ञा। ४. उपद्रव। ५. पराधीनता की पीड़ा (दुख)
६. इच्छापूर्ति की जलन। ७. परिभाषायें। ८. जबान न खोलने की रीति
९. जादू। १०. मानी हुई।

पाँच

भर आई आंख तो अक्सर किसी के नाम के साथ,
 मगर वो अस्क^१ जो छलका किये हैं जाम के साथ।
 क्रोरो-जलवा-ए-साकी, क्रोरो जाम के^२ साथ,
 चिराग जलते है किस हुस्ने-एहतिमाम^३ के साथ।
 महे-तमाम की^४ बातें महे-तमाम के साथ,
 वो रात होगई मनसूव^५ उन के नाम के साथ।
 कफस में^६ रह के भी अक्सर बहार का 'दामन',
 नजर से चूम लिया हमने एहतिराम के साथ।
 चमन पे साया-ए-अब्रे-बहार^७ क्या कहिये,
 वो जुल्फ रुख पे^८ विखरती है इलतिजाम के साथ^९।
 वफा तो दीलते-नामूसे-दिल^{१०} लुटा बंठी,
 हवस को^{११} रब्त^{१२} मुवारक हो नगो-नाम^{१३} के साथ।
 कोई समझ न सका राजे-दिलबरी 'तावां',
 ये लुत्फे-खास^{१४} है इक शाने-इन्तिक्राम के^{१५} साथ।

-
१. आमू। २. फरोगे जाम। ३. सुन्दर ढंग से। ४. पूरे चांद की।
 ५. सम्बन्धित। ६. पिजड़े में। ७. दस्तान्त ऋतु के बादल की छाया। ८.
 चेहरे पर केस। ९. अनिवार्य रूप से। १०. दिल का मर्दादा रुपी बन।
 ११. लोलुपता को। १२. संवद। १३. वरनामी। १४. विशेष अनुरूप।
 १५. प्रतिसोध की शान।

छः

गुलशन में सय्याद^१ की साजिश आखिर को नाकाम हुई ,
वालो-पर की नशवी-नुमा^२ कुछ और भी जेरे-दाम^३ हुई ।
मस्जिद के आदाब जुदा मैखाने का दस्तूर जुदा ,
शेख की नादानो से इक मामूम सी शै बदनाम हुई ।
शहरे-इश्क के रहने वाले जीस्त बसर यूं करते हैं^४ ,
आरिज^५ महके सुवह मनाई, जुल्फें बिखरी शाम हुई ।
महफिल-महफिल शमा जलाई हमने सुखने-गर्मी से ,
कल थी बकंदे-तूरे-सीना^६ आज तजल्ली^७ आम हुई ।
उसकी नजर भी ऐ 'ताबां' इक जादू है इक अफसू^८ है ,
शुक के उठी एजाज हुई जब उठके शुक की इलहाम^९ हुई ।

१. आखेटक । २. वालों और परों का उगना और बढ़ना । ३. जाल के नीचे । ४. जीवन यों व्यतीत करते हैं । ५. कपोल । ६. कल तक चमक तूर पहाड़ तक सीमित थी अब हर जगह मौजूद है । ७. जादू । ८. अमत्कार । ९. ईश्वरीय संकेत ।

सात

जो अपनी तंगी-ए-दामां^१ पे मुस्करा न सका,
 सुना है अंजुमने-गुल में वार पा न सका^२।
 वो वदनसीब जो राजे-बहार पा न सका,
 चमन में शोला-ए-उरियां की^३ ताब ला न सका।
 तुझे ये फिक्र नुमूदे-सहर^४ करीब आई,
 मुझे यह गम कि चिरागे-सहर^५ जला न सका।
 वड़े अजाब^६ में है जान वादा ख्वारों की,
 कि जिक्रे-जाम हुआ दौर-जाम आ न सका।
 वही ज़बी पे^७ गुरुरे-शिकस्त^८ आज भी है,
 ये नक़्श^९ थो है जमाना जिसे मिटा न सका।
 खराब जलवा-ए-साक़ी खराब जलवा-ए-मय,
 वक़दे-होश^{१०} कोई मैकदे से जा न सका।
 मिज़ाजे-हुस्न में^{११} इतना तो दहल^{१२} था 'तावां',
 हमें मिटा तो सका वो, मगर भुला न सका।

१. दामन की तंगी। २. फूजों की महफिल में स्थान न पा सका।
 ३. नगे शोले की। ४. प्रभात-चिन्ह। ५. सुवह का दीपक। ६. कष्ट।
 ७. मार्ग पर। ८. हारने का अभिमान। ९. चित्र। १०. होश में रहते
 हुए। ११. प्रेमिका के स्वभाव में। १२. आधिपत्य।

दिल का मुआमला निगहे-मुख्तसर^१ के साथ ,
 चलती रही है छेड़ सी कफ़ी-असर^२ के साथ ।
 ये कारोबारे-शौक किसी बेखबर के साथ ,
 खेला किया हूँ काविशे-दर्दे जिगर^३ के साथ ।
 वेमायगी-ए-शौक^४ मंता-ए-नजर^५ के साथ ,
 फितरत^६ मजाक करती है अहले-हुनर के^७ साथ ।
 इक जंविशे-खफ़ी पे^८ मदारे-हयातो-मगं^९ ,
 वावस्ता हो गये हैं किसी की नजर के साथ ।
 दिलचस्प है नजारा-ए-गुलशन^{१०} नजर है शर्त^{११} ,
 कांटे गुलों के साथ हैं शवनम^{१२} शरर^{१३} के साथ ।
 दिलका जिया^{१४} था हासिले-अफ़सूने-इन्तिजार^{१५} ,
 इक शमा थी कि बुझ गई नजमे-सहर के साथ^{१६} ।
 पाए-तलव को^{१७} लरंजिसे-पैहम^{१८} के वावजूद ,
 वावस्तगी^{१९} वही है तेरी रहगुजर^{२०} के साथ ।
 आवारगी-ए-नकहते-वर्बाद^{२१} देखिये ,
 निकली चमन को छोड़ के वादे-सहर के^{२२} साथ ।
 'तावा' वही है शोरिसे-परवाज आज भी ,
 जुविश^{२३} में है फ़िजा-ए-चमन^{२४} वालो-पर के^{२५} साथ ।

१. अल्पदृष्टि । २. मस्ती और शराव का प्रभाव । ३. हृदय की पीड़ा ।
 ४. म को निवेदना । ५. नजर रूनी पूंजी । ६. प्रकृति । ७. कलाकारों के साथ ।
 ८. हल्की सी हरकत पर । ९. जीवन तथा मृत्यु का आधार है । १०. वाग के
 शब्द । ११. देखना जरूरी है । १२. ओस । १३. विगारी । १४. शक्ति ।
 १५. प्रतीक्षा रूपी जादू का निष्कर्ष । १६. सुबह के सितारे के । १७. डूढ़ने
 वाले परों को । १८. निरंतर लड़खड़ाहटों के । १९. संबंध । २०. मार्ग ।
 २१. उजड़ी हुई सुगंधि का आवारापन । २२. प्रभात समीर के । २३. गति ।
 २४. वाग का वातावरण । २५. बालों और परों के ।

आठ

कुसूर इस्क में जाहिर है सब हमारा था,
 तेरी निगाह ने दिल को अगर पुकारा था।
 वो दिन भी क्या थे कि हर वात में इशारा था,
 दिलों का राज निगाहों से आशकारा^१ था।
 हवा-ए-शौक^२ ने रंगे-हया^३ निखारा था,
 मचन-चमन लबो-रुखसार का^४ नजारा था।
 फरेब खा के तेरी शोखियों से क्या पूछें ?
 हयातो-मर्ग^५ में किस की तरफ इशारा था।
 सुजूदे-हुस्न की^६ तमकी^७ पे वार^८ था वरना,
 जवीने-शौक को ये तंग^९ भी गवारा था।
 चमन में आग न लगती तो और क्या होता,
 कि फूल-फूल के दामन में इक शरारा था।
 तबाहियों का तो दिल को गिला नहीं लेकिन,
 किसी गरीब का ये आखरी सहारा था।
 बहुत लतीफ^{१०} थे नजारे हुस्ने-बरहम^{११} के,
 मगर निगाह उठाने का किसको यारा था।

१. प्रकट। २. प्रेम रूरी वायु। ३. लज्जा का रंग। ४. होठों और फपोलो का। ५. जीवन और मृत्यु। ६. प्रेमिका के पंचांग प्रणाम। ७. दंभ। ८. वोज। ९. इस्क रूरी माया। १०. छोटा। ११. सुन्दर।

(७६)

ये कहिये जौके जुनूं काम आ गया 'तावां'
नहीं तो रस्मो-रहे-आगही ने मारा था।

नौ

बहार आई गुलअफशानियों के^१ दिन आये
 उठाओ साज राजल ख्वानियों के^२ दिन आये ।
 निगाहे-शौक की गुस्ताखियों का दौर आया,
 दिलेखराब की नादानियों के दिन आये ।
 निगाहे-हुस्न खरीदारियों पे माइल^३ है,
 मता-ए-शौक^४ की अरज़ानियों के^५ दिन आये ।

मिजाजे-अवल की नासाज़ियों का^६ मौसम है ।
 जुनू की सिलसिला जुवानियों के^७ दिन आये ।
 सिरों ने दावते-आशुफ्तगी का कस्द^८ किया,
 दिलों में दर्द की मेहमानियों के दिन आये ।

चिरागे-लाला-ओ-गुल की^९ टपक पड़ी है, लवें,
 चमन में फिर शरर अफशानियों के^{१०} दिन आये ।
 बहार बाइसे-जमियते-चमन^{११} न हुई,
 शमोमे-गुल^{१२} की परेशानियों के दिन आये ।

१. मुंह में फूल झड़ने के । २. गीत गाने के । ३. उठाए । ४. प्रेम रूपी धन । ५. सस्तेपन के । ६. बुद्धि का स्वास्थ्य बिगड़ने का । ७. उन्माद का आरम्भ करने के । ८. व्याकुलता को निमग्नित करने का निश्चय । ९. फूल रूपी दीपक । १०. चिगारियों झड़ने के । ११. बाग के संगठन का कारण । १२. फूलों की ।

